अंक : अक्टूबर-दिसम्बर, 2021

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भाषा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

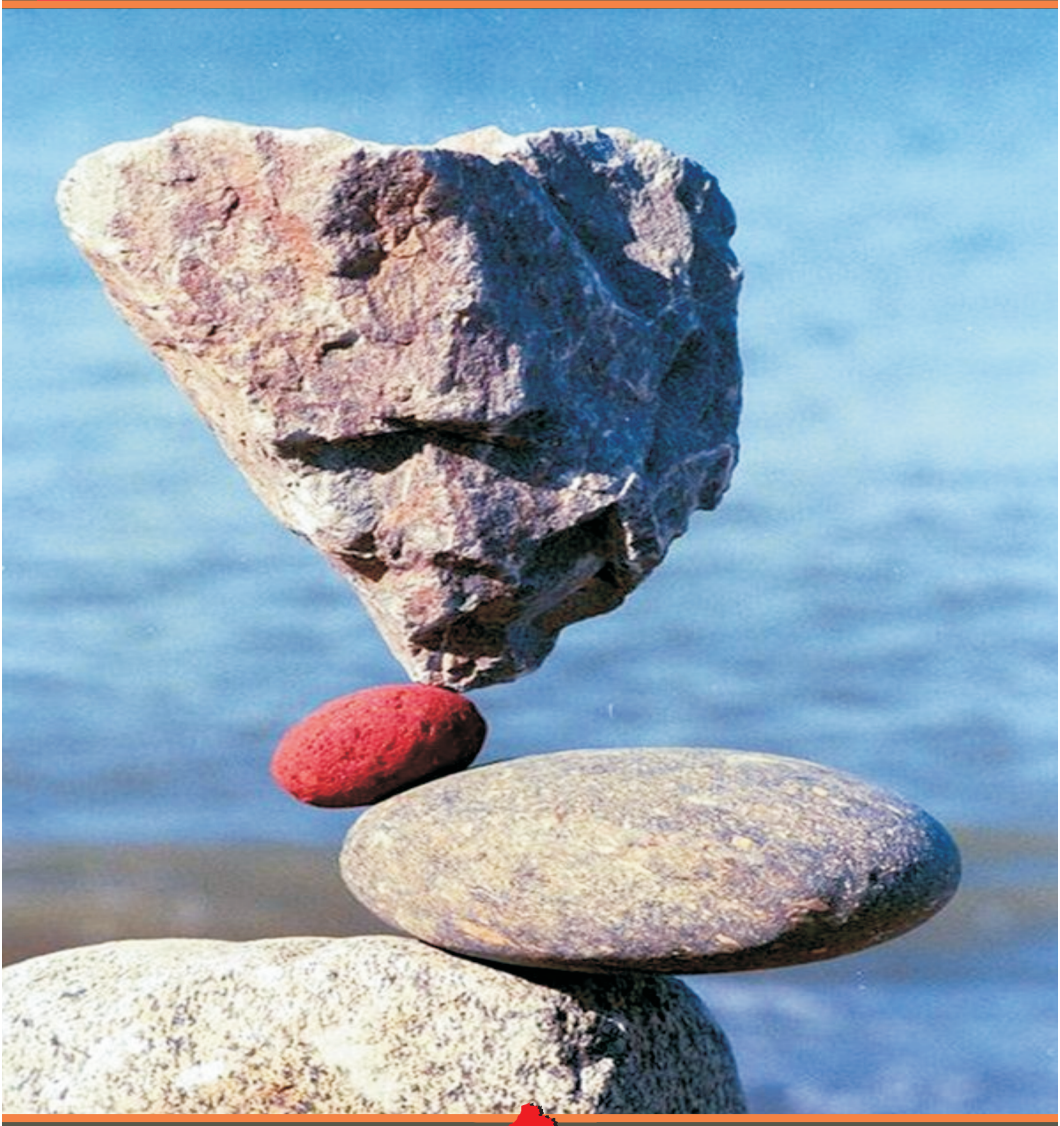

सम्पादक
श्याम महर्षि

स्थापना 1977
राजस्थली
राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री शोधपत्र

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अक्टूबर-दिसंबर, 2021

बरस : 45 अंक : 1 पूर्णांक : 153

संपादक
श्याम महर्षि

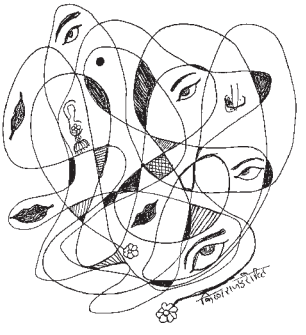

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com

आवरण
आरती शर्मा

रेखाचित्राम
किरण राजपुरोहित 'नितिला'

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

पोथीखानां रा ताळा खोलण री दरकार — *श्याम महर्षि* — 3

कहाणी

भाठा रा गांव — *चेतन स्वामी* — 4

कफन रो कमीसन — *कमल रंगा* — 11

पिछतावो — *कपिलदेव आर्य* — 14

लघुकथा

कठपूतळी — *प्रमिला सोनी* — 20

संस्मरण

बादर जी — *मनोहर सिंह राठौड़* — 21

शोध आलेख

पांडुलिपियां रा खजाना राजस्थान रा पोथीखाना — *शंकरसिंह राजपुरोहित* — 26

कविता

तरसबो / भरकी — *मंजू किशोर 'रश्मि'* — 31

पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई — *सरला सोनी 'मीरा कृष्णा'* — 33

गीत

पधारो मात भारती / थनैं गीतां में गाऊंला... — *प्रहलाद सिंह झोरड़ा* — 35

खागां रा गीत सुणाऊंली / बैर कर्‌यां है हाण मानवी — *संतोष शेखावत बरड़वा* — 37

गजल

चार गजलां — *डॉ. शंकरलाल स्वामी* — 39

तीन गजलां — *रामदयाल मेहरा* — 41

म्हारा गांव में / मन कै भीतर / भाईला — *शिवचरण सेन 'शिवा'* — 43

दूहा

बिरखा आई आंगणै / डरपै कांपै सावणी — *शिवराज भारतीय* — 45

जीवण जोबन अंत / बालपणै ब्याह — *बाबूलाल शर्मा 'बौहरा'* — 47

चितार

चारूं कानी चेती आग / आखी जगती जीत गया — *डॉ. शिवदान सिंह जोलावास* — 49

वै रूड़ी रीतां कठै — *बंशीलाल सोलंकी पल्ली* — 51

सबद-संपदा

दूहासार — *मानसिंह शेखावत 'मऊ'* — 53

बालकथा

झूठ रो जाळ — *राजकुमार जैन राजन* — 55

पगां मांय पांख — *राजेश अरोड़ा* — 57

कूंत

ब्याधि-उच्छब : कोरोनाकाल रो व्यंग्य उपन्यास — *स. भूपेंद्र सिंह* — 59

रपट

राजस्थली रै विशेषांक साथै लेखिका-सम्मेलन — *किरण राजपुरोहित* — 62

संपादकीय

पोथीखानां रा ताळा खोलण री दरकार

राजस्थानी साहित्य प्राचीन काळ सूं ई रातो-मातो रैयो है। वीरगाथा काळ रै नांव सूं विख्यात राजस्थानी रो मध्यकाळ ई साहित्य रो सिमरध भंडार मानीजै। आज ई मोकळी अैड़ी महताऊ पांडुलिपियां राजस्थान रा पोथीखानां में पड़ी है, जिणां नैं प्रकास में लावण री जरूरत है। जोधपुर में पं. रामकरण आसोपा, डॉ. सीताराम लाळस, डॉ. रामप्रसाद दाधीच, डॉ. नारायणसिंह भाटी, विजयदान देथा, कोमल कोठारी तो बीकानेर में डॉ. बदरीप्रसाद साकरिया, अगरचंद नाहटा, डॉ. नरोत्तमदास स्वामी, ठा. रामसिंह, सूर्यकरण पारीक, डॉ. मनोहर शर्मा, सूर्यशंकर पारीक, मूळचंद प्राणेश, चूरू रा गोविंद अग्रवाल, सुबोध अग्रवाल, शेखावाटी रा सौभाग्यसिंह शेखावत, कुंवर देवीसिंह मंडावा आद अैड़ा मोकळा शोध अध्येता अर आधिकारिक विद्वान हा जका राजस्थानी री मोकळी पांडुलिपियां नैं आपरी टीकावां सागै प्रकाश में लाया। आं विद्वानां रै संपादन में निकळण वाळी शोध पत्रिकावां 'परम्परा', 'वाणी', 'संस्क्रति', 'शोधमाळ', 'शोध पत्रिका', 'राजस्थान भारती', 'वरदा', 'विश्वम्भरा', 'वैचारिकी' मांय सूं किणी अेक रै ई प्रकाशन री खबर नीं है, जदकै आं पत्रिकावां रै पुराणा अंकां में राजस्थानी लोकगीत, लोकगाथा, लोक कहावतां, संस्कृति अर बातां-ख्यातां सूं संबंधित अलेखूं आलेख है जका आं विसयां सूं संबंधित प्रकाशित पोथ्यां में ई नीं लाधै। इणी भांत श्री शार्दुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर; भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर; राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर; जगदीशसिंह गहलोत शोध संस्थान, जोधपुर; नगरश्री, चूरू; रूपायन संस्थान, बोरूंदा आद शोध संस्थावां रा काम-काज ई आज री बगत ठप्प सा पड़्या है। ऊपरला शोध विद्वानां रै जावण कै संस्थान सूं सेवानिवृत्ति रै सागै ई आं शोध-संस्थावां रा शोधकारज ठैर-सा गया है। आं मांय सूं घणकरा शोध-संस्थानां रा पुस्तकालय अर पोथीखाना रै ई ताळा लाग्योड़ा है। आज राजस्थानी रा शोधार्थी कै दूजी भासावां रा शोधार्थी राजस्थानी लोक साहित्य अर संस्कृति रा विसयां नैं लेय'र जका शॉर्टकट में शोध-कारज कर रैया है, बै आपां सूं छाना कोनी। घणकरा शोधार्थियां नैं तो राजस्थानी रै प्राचीन कै मध्यकाळ सूं संबंधित शोध रो विसय लेंवता ई हियाखायी आवै। घणकरा शोधार्थियां रो शोधकारज अबै आधुनिक साहित्य माथै केंद्रित होयग्यो है अर बो भी अैड़ो विसय लेय'र जकै सूं संबंधित पोथ्यां आराम सूं अेक ठौड़ मिल जावै। आज जरूरत इण बात री है कै राजस्थान में बरसां सूं संचालित शोध-संस्थावां नैं पाछी गतिमान बणायी जावै अर घणो नीं तो कम सूं बांरा बरसां सूं बंद पड़्या पोथीखानां नैं तो शोधार्थियां सारू खोलणा ई चाईजै।

-श्याम महर्षि

चेतन स्वामी

भाठा रा गांव

भाईजी मुंबई सूं आयोड़ा है। खासा बरसां सूं बै काळबादेवी में कॉटन एक्सचेंज नैड़ै कपड़ै री दलाली रो काम करै। मोटा दलाल नीं हुवण रै कारण बांरो काम चरड़घाणी-सो ई चालै। बांनै लायां नै घर खरचो चलावण अठै देस में ई पईसा भेजणा पड़ै अर बठै आपरै लुगाई-टाबरां रो खरचो ई काढणो पड़ै। कणै ई कोई फोरी पारटी रा पईसा डूब जावै, उण रो खामियाजो ई बांनै भोगणो पड़ै। बै देस आवै जित्ती बरियां कैवै, ''कंपीटिशन रै जुग में दलाली कोई सोरो काम कोनी रैयग्यो, कपड़ा बाजार तो सफां ई गतरस-सो हुयग्यो।'' घणी बिरियां तो बै मत्तो करै कै इण नांय सूं तो सूरत चल्या जावां तो ठीक रैवै, पण बांरा टाबर कैवै—नां पापा, मुंबई में ई रैयसां। कांई करै लाई भाईजी, टाबरां रो कैयोड़ो मानणो पड़ै।

भाईजी मुंबई कांनी मुंडो कोई सतरै-अठारह बरस पैली कर्‌यो हो। गया तो बै दूजा सपना रै पांण लगावण तांई हा, पण दो महीनां तांई खैबी खायां पछै ई जाचो जच्यो कोनी जणां कोई गांव रै सैंधै-मैंधै मिनख रै कैयां कपड़ां री दलाली रो काम पोळा लियो। केई दिन पछै दाळ-रोटी रा पईसा मिलण लागग्या। भाईजी दसवीं तांई ई पढ सक्या हा, घर री धाकाधिकावू हालत कीं चोखी कोनी ही। चालणी रा बेझ भाईजी नै दीखण लागग्या। बांरा बापूजी तो कदैई नौकरी करी नीं चाकरी, दुकान रुजगार तो करता ई क्यांसूं? आगै अर लारै पंदरै बीघा रो खेड़ियो ई हो, जिकै में जे आयै बरस दाणा हुय जावै तो पछै काळ नै जाणै ई कुण! जीसा म्हारा, मुधरै गळै रा धणी हा, आपरी मौज में डूंचै माथै बैठ रागळी करता तो आसै-पासै रै खेतां रा मिनख भेळा हुय जावता। जीसा कैवता, अेकर दोयेक साल म्हैं टाबर थकै 'कतार' लादण रो काम ई कर्‌यो। कतारिया कै तो

काळू बास, श्रीडूंगरगढ़ (राज.) मो. 9461037562

 ISSN : 2320-0995

रिगळी करै कै पछै गावै, म्हनै गावण रै कोड खातर लेय जावता हा, नींतर वजन उठावण में तो म्हैं साव कंवळाठियो हो। ऊंठ री पूंछ अपड़ नीची धूण घाल म्हैं बिणजारो उगेरतो तो कोस-कोस री भांय तांणी सुणीजतो। म्हैं जद 'बिणजारा रे लोभी' रो ऊंचो रैको लेवतो तो साचै ई कोस-कोस आवाज जावती। और तो और, ऊंठ ई थम जावता। सागेड़ी कैवता—सुरजा! बिणजारो नां गाया कर, अै डगरा चाल धीमी कर लेवै। म्हैं सौकीजतो। कैवतो—भाया, म्हैं तो गंधरब हां, गाणो-बजाणो ई तो म्हारो काम है। म्हारी कदर करणियां बिलां में बिलायग्या, जणां थांरै सागै दूजा-दूजा खिसब करां, अबै म्हांनै कुण बूझै? कतारिया ई क्यूं, दूर-दूर रा लोग म्हारै गळै री तारीफ करता, पुराणिया गीत, हरजस म्हनै घणो चेतै हा, म्हनै जांगड़ा ई घणा आवता, पण म्हैं कदैई जांन-बरात में गावण कोनी गयो, गयो तो म्हैं म्हारी मौज में ई। मोल सटै गावणो म्हनै पसंद नीं हो।

जीसा नै सात बरस हुयग्या, बै अबै इण संसार में नीं है। पण बांरै सौक री बातां ओजूं ई कीं-कीं म्हनै चेतै है। बै कैया करता कै अेकर अैड़ो नाजोगो जुग आयो, आपणी सगळी रागां लोप हुयगी। औ तो भलो हुवो भातखंडेजी रो, लाई आखै भारतभोम में घूम-घूम गमेड़ी रागां नै पाछी भेळी करी। बांरी सुरलिपि बणाय'र तहताज कर दिन्ही, पण अबै कुण जाणै रै रागां नै, कुण चंचेड़ै सुरलिप्यां नै, पड़ी है बापड़ी, कठैई कागदां में। जीसा अेक ऊंडो-सो निसखारो न्हाखता। म्हे तीनूं भाई बांरी बातां तो सुणता पण म्हारै दर ई समझ में नीं आवती कै बै किण बात रो दुख कर रैया है। घर में फोड़ो तो हमेसा चीजबस्त रो रैवै—म्हारै पैंट-बुरसट रो, पोथ्यां-पढाई रो, इण री तो बै कदैई नीं चिंत्या करी, नीं दुखराया। मां अभावां रो झींकणो झींकबो ई करती, बांरै अंगैई फरक नीं पड़तो।

बै अेक दिन रोट्यां पोवती मां सूं कैयो, ''दीनू री मां, थे लुगायां पीळो गावो हो नीं, ओ राग पीळू में है।'' बांरी इण खोज सूं मां रै जाणै कीं फरक ई नीं पड़्यो। बै कीं ताळ इण सोध सूं कीं राजी-सा रैया, पछै आपरै बींमै लागग्या। राग-रागळ्यां पेटै बांनै कोई नूंवी बात उकलती तो उण रा नतीजा सुणावण खातर फगत मां ई ही। स्यात मां नै बै इण वास्तै सुणावता कै मां मालासी गांव रा जाणीता गायबी भूरारामजी री बेटी हा, बीकानेर महाराजा सादूळसिंघजी बांरो गायबो सुण्या करता। बांरै परताप ई मालासी में पक्को घर भूरजी कत्थक रो बण्यो हो। जीसा रै बैम रैवतो कै इत्ता लूंठा गायबी री धीव है, कीं तो गाणै रा संस्कार रैवता ई हुयसी, पण म्हारै घर रा अभाव जाणै दिनूंदिन मां नै भाठै री बणावता जाय रैया हा। म्हारी मां खुद मीठै गळै री धणी है, रातीजोगै रा लांबा गीत बिनाणीड़ो, काजळ, जसमल, कलाळी स्यात ई कोई बां जैड़ा गा सकै, पण बांरी गीतेरण जाणै दुख री अेक चादर ओढ लीन्ही। घर रा खाली पीपां में जद ढबढेळा खावती तो उणनै लागतो कै रागळी सूं तो आंनै भर्‌या कोनी जाय सकै। म्हैं पांच भैण-भायां माथै बा

छत्तर ताण्यां राखती। आपरै अेक टैम खावण नै नीं हुवतो तो कोई बात नीं, पण टाबरां नै भूखा सोवावणा उणनै दर ई नीं पोसावतो। बाजरी अर मोठ म्हारै दोनूं टैम रो जीमण हो। सिंझ्या बाजरी–मोठ रो खीचड़ो, जिणमें छटाकं, छटांकेक दूध रो लगावण अर दिनुगै मोठां री दाळ, कणैई गूंदळी–आलू रो साग, लगैटगै बारूं मास म्हारो ओ ई जीमण हो। खेत में हुयोड़ी पांच–छह बोरी बाजरी, बोरी–दोय बोरी मोठ, सालभर म्हारै आखै घर रा प्राण बचावणै रा साधन हा। कीं तिल हुवता जिकै रै तेल नै काठो–मीठो बारह महीना सरावता। ओ मीठो तेल ई म्हे सिर रै लगावता। म्हारै घर में फोड़ो तो म्हारै कपड़ां, पाटी–बस्तां, मीठाण अर लूण–मिरच बेसवार रो रैवतो। भाईजी रो ब्याव मंड्यो तद बेसी तळतळावण बधी। भरी खण सोनो, पचास भरी चांदी रो जुगाड़ पांच बीघा खेत बेच्यां ई सरयो। इयां ई दोनूं भैणां रै ब्याव में बाकी बच्योड़ो दस बीघा खेत ई परायो हुयग्यो।

अब कोई अेक जणो कमावै, तद ई पार पड़ै। ब्याव रै तीजै ई महीनै भाईजी नै मुंबई बहीर हुवणो पड़्यो। म्हारा मामा कैयो कै मुंबई में आपणी जात रा बोहळा लोग काम करै, केई तो इत्ता पईसांवाळा है कै आपां रै अठै तो इत्ता पईसांवाळा है ई कोनी। भाईजी रै अै बातां घणी जचती अर बै अेक दिन मुंबई री टिगट कटा लीन्ही। जीसा रै तो कमती ई जची, बां तो मुंहफटपणै सूं कैय ई दीन्हो, चावै बंबोई जाय चावै अमरीका, आपांळा तो किणनै ई न्याल करै कोनी। सगळा आप–आपरी बेवणी में छाणा घालै। पण घर रा चालणीबेझ भाईजी नै बेसी सोचण नीं दीन्हो। अेक दिन बै ब्याव में सिंवायोड़ी आपरी दोय–तीन ड्रेस अेक बेगड़ी में घाल जीसा अर मां रै पगां लाग्या अर चाल बहीर हुया सुपनां री नगरी।

भाईजी नै हारमोनियम अर तबलो–ढोलक बजावणो आवता। गांव में बै सदां ई संको करता, नाचणो ई बांनै पसंद नीं हो। मुंबई रै आरामनगर में सुजानगढ रा संगीतकार रामनारायण रा संगीतकार बेटा सलिल–नलिन रो स्टूडियो हो। रामनारायणजी म्हारा मामोजी रा खास दोस्त रैया है। बै सुजानगढ आवै जणा मालासी सूं म्हारा मामोजी नै बुला लेवै। दोय–पांच दिन आपस में संगीतावू बंतळ करै, पुराणी बातां चेतै करै। भाईजी बूझता–बूझता आरामनगर पूगग्या। बै सोच राख्यो हो कै स्टूडियो कोई पट्टै, दोय पट्टै जमीन में हुसी, पण बो तो बीस गुणा चाळीस रो नळो–सो हो, जिणमें काच रा दोय पारटीसन बण्योड़ा हा। उणरै ऊपर बण्योड़ी मंजिलां में ई रामनारायणजी अर बांरा परण्या–पताया तीनूं बेटां रो परिवार रैवै। रामनारायणजी दोयेक दिन तो आपरै कमरै में सोवाण्या अर पछै रात नै सोवण री व्यवस्था स्टूडियो में करी, पण जिकै दिन मोड़ै तांई रिकॉर्डिंग चालती, भाईजी नै बैठ्यां–बैठ्यां ई रात टिपावणी पड़ती। रिकॉर्डिंग में जिण भांत रा चतर बजारा आवता, बांनै देख मत्तै ई भाईजी रै समझ में आयगी कै आपां री गिणत अठै नूं

जित्ती कोनी हुय सकै। रिद्म त्यार करती वेळा कई दफा पांच-पांच तबलची बुलाईजता, बांनै जिको ठेको भोळायो जावतो, उणमें बै इत्ता चतर हा जाणै पांच तबला नीं बाजै, अेक ई तबलो बाज रैयो है। अेक-अेक नोटिसन समझायां बां सूं घणी खेचळ करणै री जरूत नीं पड़ती। न्यारा-न्यारा संगीतकारां रा न्यारा-न्यारा ठेका हा, बै सगळा बजावण में घणा बाजींदा हा। तकायनै सुणै तो ई अेक ई मात्रा नीं कम, नीं बेसी।

रामनारायणजी रा बेटां नै तो बात करण री ई फुरसत नीं मिलती। स्टूडियो घंटां पर अंगेज रैवतो। कणैई थोड़ी फुरसत मिलती, सोभाऊ बात कर कैवता, ओ काम सोरो कोनी, बोहळो रियाज चाईजै। साल दोय साल रियाज करो, दूजां री संगत करो। इयांकली बात सुणनै भाईजी रो मुंडो उतर जावतो। बां रै अेक ई दिन निकमो रैयां कियां सरै! घरै तो दोय पईसा भेज्यां ई धान बापरै। हफ्तैभर में ई भाईजी रै काळजै डबको-सो पड़ण लागग्यो। निकमो बैठ दोय साल रियाज करच्यां, उण री तो लंका ई लूटीज जावै। बांनै इण बात रो ई परतख लखाव हुयग्यो कै रामनारायणजी रै इण स्टुडियो में रैय लांबो बगत नीं गुजारयो जाय सकै। हफ्तै में दोय-तीन दिन रात री रिकॉर्डिंग हुवै जणा आखी रात चपरासी जियां स्टूडियो रै बारलै पासै बैठ'र जागतां ई काढणी पड़ै। भाईजी नै लागण लागग्यो कै मेहमानदारी तो दोय-च्यार दिन री ई हुवै। मुंबई जियांकली जग्यां में घणो मुलाहिलो कुण साध सकै। स्टूडियो में सोवण रै बंदोबस्त रै लारै ओ ई जतावणो हो कै अठै जग्यां रो घणो खासो तोड़ो है।

भाईजी में खानदानी जित्ती-सी कळा ही, उण सूं तो किणी छोटी-मोटी मैफल कै पछै जागरण में भलां ई काम चलायो जाय सकै। गावणिया-बजावणियां री आखी तजबीज आपरी आंख्यां सूं जोयां भाईजी नै पक्को नेहचो हुयग्यो कै इण खेतर में उतरण खातर वाकई बोहळी मिणत री दरकार पड़ै। भाईजी चोखी भांत जाणग्या कै कला री साधना कर, बै लारै जिकी जिम्मेदारियां छोड'र आया, बांनै कदांत ई पूरी नीं कर सकै। जे हुवै तो जीवड़ा, बेगो-सो काम सोध लेवणो चाईजै। म्हारै गांव में घर सूं दोय गळी आगै 'आशाराम अमरचंद' री मुंबई रै काळबादेवी में कपड़ै री आढत रो काम हो, भाईजी अंधेरी रै उण स्टूडियो सूं बारै निकळ आपरै गांव रै बाणियां री उण फर्म माथै पूगग्या। सेठां नै घणो परिचै देवण री दरकार नीं पड़ी। म्हारै जीसा री थोड़ी-घणी इज्जत भाईजी रै अठै काम आयी। तिणखा तो थोड़ी ही, पण रैवण रो ठांयचो अर घरै खरचो भेजण री इण तजबीज सूं भाईजी घणा राजी हुया। घरै समाचार पूग्यां म्हे दोनूं भाई थोड़ा तो निरास हुया। स्कूल में सागै पढणियां भायला मुंडागै म्हे थान फाड़ दीन्हा हा, ''म्हारा भाईजी फिल्मां में संगीत देवण नै गया है।'' अबै बांनै कियां बतावां कै भाईजी तो कपड़ै री दुकान माथै काम करै। इण वास्तै अबै म्हैं बांनै भाईजी पेटै कीं ई बतावणो ठीक नीं समझ्यो। म्हैं

छोटियै भाई नै ई समझा दीन्हो कै आपां नै भाईजी पेटै बूझै तो खाली इत्तो ई बतावणो है कै बै मुंबई गयोड़ा है, के काम करै, ओ म्हांनै बेरो कोनी।

घर चलावण री खींचताण में भाईजी आपरी पांगरती-सी गावण-बजावण री कळा रो गळो मोस न्हाख्यो। कणै ई देस आयां म्हारै बरगो इण पेटै कीं दुखरावतो तो बै हंस'र कैवता, ''भाया, जूती पग नै छोलै, बीं नै कित्ता दिन पहरी जाय सकै। ठीक ई तो रैयो, महीनै दोय महीनै में म्हैं म्हारै भाग नै ओळख लीन्हो, मुंबई में म्हारै जैड़ा हजारूं लोग आपरै बगत री उडीकना करता उमर गाळ देवै, पण सक्सेस नीं लिखेड़ी हुवै तो नीं ई मिलै। म्हैं लारै थां लोगां नै उजाड़ण री हिम्मत नीं कर सक्यो।''

भाईजी रै इण अवदाण सूं म्हारी आंख्यां गीली-सी हुयगी। मुंबई जावण रै दोयेक महीनां पछै ई बै जद पैली तिणखा सेठां रै टाबर सागै घरै भेजी तो जीसा गळगळा हुयग्या। बै सेठां रै टाबर नै आसीस देय रैया हा, ''वा भाया, थरी हजारी उमर हुवो।'' इण मिस बै हजारी उमर री आसीस भाईजी अर सेठां रै टाबर दोनुवां नै ई देवै हा।

तीन बरसां लग भाईजी नौकरी करी, पछै आपरै तल्लै-मल्लै कपड़ै री दलाली करण लागग्या। दलाली रा सरू रा दिन चोखा निकळ्या। अठै घरै बै च्यार आसरा पक्का बणवा लीन्हा हा पण जीसा रै रामसरण हुयां पछै आपरै टाबरां अर भाभीजी नै साथै लेयग्या। भाईजी रो अैसान म्हे दोनूं भाई तो कदैई भूल ई नीं सकां, म्हे दोनूं भाई पोस्ट ग्रेजुएशन कर लीन्ही। म्हैं संगीत में एम.ए. करी अर छोटो भाई हिंदी में। दोनुवां री बेगी ई फर्स्ट ग्रेड अध्यापक रै पद माथै नौकरी ई लागगी। म्हां दोनुवां री नौकरी लाग्यां मां अर भाईजी घणा राजी हुया। मां भाईजी नै कैयो, ''दीना, अब थूं अठै पईसा मत भेज्या कर, थारा दोय पईसा भेळा कर। थारै ई टाबर मोटो हुवै।''

भाईजी मां रै साम्हीं हंस'र रैयग्या।

भाईजी, मुंबई सूं आयोड़ा है—पांचेक दिनां री छुट्टी काढ'र। तीनूं भाई अेकै सागै भेळा हुया तो भोत राजी हुया। मां कैयो, ''दीना, थूं डेढ साल सूं आयो है, तीनूं भाई जावो, डूंगर बालाजी रै सवामणी कर आवो। अबार आपां रै रामजी राजी है।''

भाईजी कैयो, ''मां, परसूं मंगळ है, आपां गाडी कर लेयसां। थे ई साथै हुय लिया।'' मां कैयो, ''नां बेटा, म्हारै गोडां में दरद रैवै, इत्तो ऊंचो चढीजै कोनी, बळिहारै म्हैं तो अठै सूं ई हाथ जोड़ लेयसूं, थारी बीनण्यां नै साथै लेय जावो। थे सगळा जावो।''

छोटियो भाई उम्मेद अेक ग्यारह सीटर गाडी कर ल्यायो। हवाई मोती महाराज दिनुगै ई सवामणी घरै पूगाय दीन्ही। उणमें सूं सवा पांच किलो प्रसादी म्हे साथै लेय

लीन्ही। उम्मेद ड्राईवर बरोबर री सीट माथै बैठग्यो। म्हे दोनूं भाई बिचली सीट माथै बैठ'र बातां करण लागग्या।

इंदपाळसर री कांकड़ टिपतां ई म्हैं गाडी रुकवाई। फाटक खोल'र नीचै उतरयो अर लांबो पसर भोम नै दंडवत प्रणाम करयो। लुगायां, टाबर अर भाईजी म्हनै अचंभै सूं जोवै हा। बांरै कीं समझ में ई नीं आयो। म्हैं पाछो गाडी में बैठ्यो तो भाईजी बूझ्यो, ''अठै किणनै प्रणाम करयो?''

म्हैं होळै-सी कैयो, ''आपणी भोम री कांकड़ नै।''

भाईजी रै बात कीं खास समझ नीं आयी। भाईजी कैयो, ''आपणै गांव री कांकड़ तो तीस किलोमीटर लारै रैयगी।''

म्हैं फेरूं होळै-सी उथळो दीन्हो, ''पण आपणी असली कांकड़ अठै सूं सरू हुवै। बीदावाटी में कत्थकां रो ओ छेकड़लो गांव है, इण पछै आखी भोम आपणी है।''

डूंगर बालाजी री अैन जड़ां में बस्योड़ै गांव गोपालपुरा पूगतां अेकर भळै म्हैं गाडी रुकवाई अर बियां ई भोम नै दंडौत करी। भाईजी हंस'र कैयो, ''अठै कुणसी कांकड़ है?''

म्हारै मुंडै ऊपरां दीपती चिलक ही, ''अठै आपणी राजधानी ही, भगवान किरसण री बगत इण ठौड़ आपां कत्थकां रो घणो आघमान हो। अठै सूं ई आपां आखै संसार में फैल्या। इण गंधरब भोम रै महतब नै कुण जाण सकै?''

म्हारै इण उथळै सूं भाईजी में कीं बेसी हळचळ नीं हुयी।

डूंगर बालाजी रै पेड़्यां-पेड़्यां ऊपर चढतां म्हांनै कोई डोढ घंटो लाग्यो। निज मिंदर सूं थोड़ो हेटै अेक चोड़ौ चौगान आवै। अेक ऊंचै-चौड़ै भाठै माथै बैठण रो म्हैं भाईजी नै न्होरो करयो। उम्मेद अर टाबर मिंदर में बड़ै हा। म्हैं भाईजी नै कैयो, ''देखो भाईजी, अठै सूं कनला-कनला कित्ता गांव दीखै, आं सगळा गांवां में कत्थक बस्या करता। म्हनै तो बांरा बोल 'तत् थुन दृग, थुन तत् तत् त्रिकिट' अबार ई सुणीज रैया है। भाईजी कीं पीढी अपूठा चालो तो अठै आपां रो उगेरयोड़ो अनाहत-आहतनाद ओजूं ई इण बीदावाटी री भोम ऊपरां तिर रैयो है। भाईजी, आपणै घराणै रा गुणीजण जानकीप्रसाद, चुन्नीलाल, दुर्गाप्रसाद, जयलाल, सुंदरप्रसाद, कुंदणलाल—इणी भोम रा तो लाल है।''

बालाजी रै भलीभांत सवामणी चढायां पछै भाईजी कळस में ग्यारह सौ रिपिया चढाया। बालाजी रै आगै केई ताळ ध्यान लगायां ऊभा रैया। स्यात कीं अरदास करै हा।

डूंगर सूं पाछा उतरता टाबर कोड-कोड में आगै वूहा गया। समतल चौगान आवतां ई म्हैं अेकर फेरूं कत्थकां रै गांव कांनी मुंडो करयो अर पाछो उणी भाठै माथै थोड़ो

बैठण री सैन करी। पछै जोर सूं अेक लांबो आलाप भर्‌यो अर जोर सूं गायो—''बिणजारा रे ऽऽऽ लोभी...!'' कीं ताळ तांई अलाप अर डूंगर रै भाठां माथै तड़ाछ खावती रैयी। पाणी सांचर्‌योड़ी आंख्यां सूं म्हैं निर्विकार भाईजी रै मुंडै कांनी भाळतां कैयो, ''भाईजी, इण भोम रै गुणीजणां रै आलाप में म्हैं जीसा रै आलाप नै रळाय दीन्हो, अबै बै बांरै जोड़ाजोड़ है।''

भाईजी कीं पड़ूत्तर कोनी दीन्हो।

गांव कांनी पाछा बहीर हुवता भाईजी दूंकर में ठौड़-ठौड़ भाठा में चीकणा स्लैब, चौका बणावणवाळी खासा फैक्टर्‌यां नै देख अचंभो कर्‌यो। म्हैं बतायो, ''भाईजी, अठै थोड़ा बरसां पैली अेक भाठै री किस्म निकळी है, जिण रा पाटिया देस-विदेस में घणा पसंद करीजै, ओ धंधो अठै बढिया चाल रैयो है।''

भाईजी उतावळा-सा कैयो, ''आपां ई अठै अेक फैक्टरी लगाय लेवां तो?''

''भाईजीऽऽऽ!'' म्हैं जोर सूं चिरळायो। पछै कीं बांरो संको करतां अधर-सी कैयो, ''कदैई इण गांव रा गायबी नामी हुया करता, भाईजी खयाल रो जलम अठै ई हुयो, अमीर खुसरो अठै सूं ई राग पकड़्यो अर शास्त्रीय संगीत री पेड़्यां चढतो बंगाल रै कांठै जाय पूग्यो...''

म्हैं देख रैयो हो, भाईजी म्हारी बात कम सुण, बारै पड़्या दगड़ां रै ढिगलै नै निरख रैया हा। ...म्हैं देखै हो, मुंबई मिनखां नै भाठै रा बणाय देवै।

◆◆

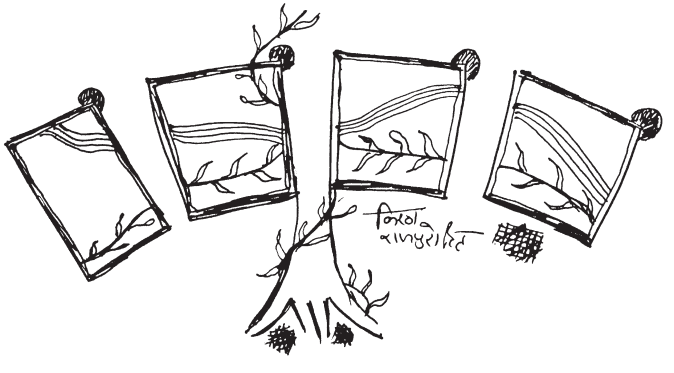

कमल रंगा

कफन रो कमीसन

रवि री निजर उण पर पड़ी तो उणनैं लखायो कै उणरी आंख्यां आपरै दफ्तर रै मैला पड़दां, चीकट, मेजपोसां कै आंकी-बांकी अर अधटूट कुरस्यां री गळाई उणनैं ई नित देखण रै हेवा होयगी है; सेवट उणनैं आवती नैं ई तो कोई बरस-खंड पूरो होय रैयो हो। भरी जवानी में विधवापणै री खै खायोड़ो उणरो अनेसो आज पण कीं तीखो लाग्यो। बा हरमेस री गळाई दफ्तर रै पगोथियां माथै अेकै पासी आपरी तमाखू-बरणी ओढणी ओढ्यां सूनी-सी बैठी ही। रवि नैं ठा हो, मुआवजै वाळी सीट नैं 'डील' करण वाळो बाबू दीनानाथ जद बारह बजी आवैला, तो आ भी मांय आवैला। बाबू अेकर इणनैं झिड़क'र पाछी भेजैला अर आ घड़ी-आधघड़ी फेरूं पगोथियां माथै बैठ'र फेरूं भाग आजमावैला... इणी ढाळै आज ई च्यार बज जावैला अर मुआवजै वाळा बाबूजी किणी बीजै जरूरी काम सूं गायब होय जावैला।

रवि नैं इणरो 'केस' निगै है।

इण लुगाई रो घरवाळो कारखानै मांय काम करती बगत दुरघटणा रो सिकार होय'र मरग्यो हो। मजूरां रै मेहनतानै अर हकां री हिफाजत सारू थरपीज्योड़ै इण महकमै मांय कारखानै कानी सूं दिरीजी थकी क्षतिपूरती री रासि जमा ही अर इणनैं मिलणी ही। इणरै धणी नैं मर्‌यां सवा बरस बीतग्यो अर इणनैं इण दफ्तर रा चक्कर लगावतां लगैटगै अेक बरस होयग्यो। रवि सरधा-सारू इण रो मुआवजो दिरावण री सिफारिस ई करी, पण बाबू दीनानाथ घटियापणै री हद लांघग्यो। बोल्यो, ''थारो साफ्ट-कार्नर तो देखणो ई पड़सी... पण पईसा-टक्का तो थे लेवो कोनी, रूप रा रसिया तो हुवोला ई... म्हैं तो पईसै रा पुजारी हां, अर... थांनै ठा ईज है। रीत रो रायतो तो उणनैं करणो ई पड़सी।''

रंगा कोठी, सुकमलायतन, डी 96-97 मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर 334004 मो. 9928629444

रवि पग पाछा देय दिया। भलाई मांय भूंड उखणण जित्ती सरधा उणरी नीं ही। लुगाई का तो भोळी ही, का अणूती स्याणी कै बा आपरी जग्यां अटळ अर दीनानाथ बाबू आपरी जग्यां।

रवि आपरी सीट माथै आय'र बैठग्यो अर आपरै काम मांय हरमेस री गळाई सो-कीं बिसरग्यो।

कोई तीन, सवा तीन बजी होवैला; दूजोड़ै सेक्शन मांय जोर सूं रोळो माच्यो। सगळां भेळो रवि ई उठ'र खिलको देखण सारू भाज्यो। बो देख्यो कै नितूगै पगोथियां माथै बैठण वाळी बा ईज लुगाई बाबू दीनानाथ रा झींटा झाल राख्या हा अर लोगड़ा बीच-बचाव करै हा... पण लुगाई री पकड़ अैड़ी जबरी है कै दीनानाथ रा झींटा टूट'र उणरी मुट्ठी मांय रैय जावै तो रैय जावै, छूटणा मुस्किल।

''छोड दो... अरे छोड दो बाईसा...! धीरज सूं बात करो, औ राज रो दफ्तर है।'' ओ.ए. साब अळगा ऊभा उचक-उचक'र लुगाई नैं समझावै हा।''

''खाफणचोर.. मरज्याणा... थनैं दोवां मांय सूं अेक चीज चाईजै... ले, मोड़ो क्यूं करै, अबार ई लेवै नीं थारी मां-रांड रो बोबो...।''

लोग दरसाव देख'र सैंतरा-बैंतरा होयग्या। बा जवान विधवा आपरै डावै हांचळ नैं कांचळी सूं काढ'र जीवणै हाथ में पकड़्यां ऊभी ही, ''लै, अबै लारै क्यूं सिरकै... आव!''

दीनानाथ रा झींटा छूटग्या हा। होय सकै, कीं ऊपड़'र लुगाई रै हाथ में ई रैया हुवै... बो आपरी मेज लारै ऊभो थर-थर धूजै हो कै साब आयग्या। साब अेक पल मांय सगळो नजारो समझग्या अर लुगाई सूं मुखातिब होयग्या, ''म्हैं इणनैं अबार रो अबार नौकरी सूं काढूं... थे बाईसा म्हारै सागै आवो... म्हनैं बताओ कै इण थांनै कांई कैयो... थे आवो।''

साब री मधरी अर निरणायक आवाज रो असर लुगाई माथै पड़्यो। बा आपरी ओढणी सावळ करती साब रै लारै-लारै चाल'र बां रै चैम्बर मांय बड़गी। दफ्तर मांय अजीब, रहस्यमय-सी खुसर-पुसर चालू होयगी जिणरो सीधो संबंध मुआवजै वाळै बाबू दीनानाथ रै अेन नजीक ऊभै भविस सूं हो। दोय-तीन जणा दीनानाथ री मेज रै नजीक ऊभा खुलासो ई लेवै हा। सेवट ओ.ए. साब नैं चैम्बर माय जावण सारू अरदास करीजी।

''काठो राखो थांरो मुआवजो।'' ओ.ए. साब चैम्बर मांय बड़्या जद लुगाई कैवै ही, ''आ धूड़खाणी करणी होवती तो थांरा चक्कर क्यूं काटती.. म्हारी बास-गवाड़ी में ई घणा ई गंडक जीभ लपलपावता फिरै म्हारै लारै...।''

''थे थोड़ी सांयती तो राखो!'' साब उणैं समझावता थकां ओ.ए. साब सूं मुखातिब हुया, ''पियोन को बोलो, पानी लेकर आए...।''

ओ.ए. साब पाछा निसरग्या अर चपरासी नैं पाणी देय'र भेज दीन्हो।

थोड़ीक ताळ बाद साब रै कमरै री कालबैल दूसर बाजी। चपरासी भाज्यो। हुकम लियो अर सीधो दीनानाथ बाबू री सीट माथै, ''चेक काटता हुवो फटाफट... आज तो रणचंडी चेक लेय'र ई जावैला...।''

बाबू दीनानाथ नैं जाणै डूबतै नैं किनारो हाथ लाग्यो। बो झटपट अलमारी खोली अर कागज संभाळ्या। पलक झपकतै तो बो फाईल लियां साब रै कमरै कानी भाजतो दीस्यो। दीनानाथ मांय पूग्यो जद फाईल उण कनै सूं लेय'र साब उणनैं फटकार्‌यो, ''जाओ यहां से... ओ.ए. साब को भेज दो...।''

ओ.ए. साब दूसर चैम्बर मांय घुस्या तद तांई लुगाई खासी मोळी पड़गी ही अर साब उणरी सीधी-सादी अक्कल मांय राजकाज रै आडा-टेढा मारगां रो ग्यान ठूंसै हा।

पांच-सात मिनट बाद बा लुगाई चेक हाथ मांय लियां बारै नीसरी। दीनानाथ बाबू माथै उणरी निजर पड़तां ई बा गुराई, ''कफन रो कमीसन चाईजै नीं थनैं... मिल्यो कै नीं ओज्यूं?''

दीनानाथ नाड़ नीची घाल लीन्ही।

लुगाई रै दफ्तर सूं निसरतां ई जाणै आक्सीजन रो लैरको आयग्यो। सगळा, फगत रवि नैं छोड'र अेक अणूती लांबी सांस लीन्ही... रवि जाण्यो, अबै बाबू दीनानाथ री गिरै है, साब उणनैं बुलावैला। पण इण सूं पैलां च्यार-पांच जणा बिना बुलायां ई साब रै कमरै मांय घुसग्या। थोड़ी ताळ मांय चैम्बर सूं निसर'र हंसी रा कणूका आखै दफ्तर मांय खिंडण लागग्या। रवि रै कीं समझ नीं आयो।

◆◆

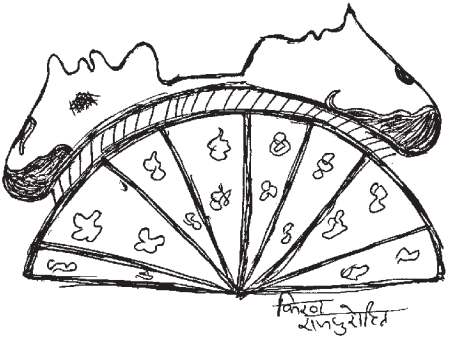

कपिलदेव आर्य

पिछतावो

म्हारो लाडलो करन काल चवदा बरस रो हुय जासी। इण खुसी रै टाणै नैं सलिब्रेट करण सारू म्हैं झुंझणूं स्हैर रो अेक रेस्टोरेंट बुक करणै आयी अर अेडवांस देय'र जियां ई पाछी बावड़ी, अेक जाण-पिछाण वाळै सख्स नैं देख'र उण ठौड़ ई ठैरगी। सागी बो ई हो अर अेक टेबल पर दो जणा सागै बैठ्यो चाय पीवै हो। चाय रो तो तगड़ो सौकीन हो बो। आधी रात नै उठा'र भी पूछल्यो तो बंदो चाय सारू नीं नटै। चाय पीवण रो भी आपरो अेक निरवाळो स्टाइल है। अेक-अेक घूंट नैं सरजीवण बूंटी ज्यूं होळै-होळै इण हिसाब सूं पीवै, जियां मदछकिया दारू रा पैग मारै अर चाय पींवती टेम आंख्यां में बै ईज मदभरिया भाव देखण नै मिलै। खैर, बंदोपरवर आपरी ई मज में सुरड़-सुरड़ लाग रैयो हो, हालांकै म्हारै कानी बीं री पीठ ही, पण म्हैं इण सख्स नैं हजारां री भीड़ मांय ई आराम सूं ओळख सकूं। बीं रै सांमली कुरसी माथै अेक भोत ई सोवणी-सी नार बैठी ही। अेकदम धोळीधप्प, साउथ फिल्मां री हीरोइन जिसी। लांबी सी, बडी-बडी आंख्यां, चवड़ो ललाट, मोती-सा दांत अर पतळा-पतळा फलका-सा होठ। कांजीवरम री साड़ी बीं री रंगत पै जोरकी ओपै ही अर जियां ई म्हारी निजर बीं रै गळै री फूलपातड़्यां पर पड़ी, म्हारै सरण देणी-सी पसीनो आयग्यो। काळजो धड़का खावै लाग्यो, क्यूंकै 'फूलपातड़ी' इणी सख्स री चावी चीज है। नींतर आजकाल री छोर्‌यां कठै पैहरै!

मतलब आ इणरी जोड़ायत...! चाणचूकै ई म्हनैं चक्कर-सो आयो अर म्हैं धम्म सूं कुरसी पर बैठगी अर जीव नैं काठो करती होळै-होळै सारली कुरसी तक पूगी, ताकै बेरो तो पाड़ूं साब री किसीक निभ रैयी है?

आज आठ-दस बरसां पछै उणनैं देख्यो हो पण इत्तै सालां मांय बूढाणै री बजाय बो तो घणो फूटरो अर जवान लाग रैयो हो, लागै भी क्यूं नीं, 'बिराध' सूं पिंड जो छूटग्यो।

जद कै पैलां मुड़दी-सी काया में जाबक ई अपरोगो लागतो। हालांकै फेसकट अर

शीतळा रो मोहल्लो, वार्ड नं. 9, मंडावा, जिला-झुंझणूं (राज.) मो. 9351748847

 ISSN : 2320-0995

मुळक घणी सोवणी ही, पण अब तो रूप गिगनारां चढ रैयो हो। म्हारै हेंप रो पारावार नीं रैयो, कै इयां कीकर होय सकै ? म्हैं मोबाईल रो कैमरो ऑन कर वीडियो बणाणो सरू कर दियो। बीं रै चेहरै पर सागी बै ईज सांत, सौम्य भाव हा। धोळी दूध बरगी बत्तीसी, सागी बै ईज लांबा ऊभा बाल। हां, अब पतळी ट्रिम मूंछ्यां री जग्यां सफाचट मुखड़ो, जिणमें पैंताळीस साल रो औ सख्स अेकदम जोध-जवान सो लाग रैयो हो। लुगाई किणी बात पर खिलकटियां चढ रैयी ही। म्हनैं इयां लाग रैयो हो, जाणै म्हारी छाती पर कोई टोळ मेल दी व्है। म्हैं उणरी निजरां सूं बचबो भी चावै ही अर निजरां में आवणो भी। रोवणो भी चावै ही अर हांसणो भी। हालात काबू सूं बारै होवता लाग रैया हा। म्हैं धूजतै हाथ में मोबाईल पकड़्यां बीं रो वीडियो शूट करै ही, कै इत्तै में सुणीज्यो, ''के ल्यावूं मैडम ?''

वेटर री आवाज सुण'र म्हैं जोर सूं चिमकी अर मोबाईल हाथ सूं छूट'र तळै आ पड़्यो अर बस, औ ईज बो मोमेंट हो जद बो म्हारै कानी देख्यो।

हां, बां बोलती आंख्यां रो सामनो करण री म्हारी हिम्मत तो नीं पड़ी, पण म्हैं पछै भी कदै टोर बांधती, कदै निजर चुरावती तो कदै कनखियां सूं देखती... बीं रै मूंडै पर बै ई चिर-परिचित कातिल भाव हा... छेकड़ म्हारी और हिम्मत नीं हुयी तो म्हैं मूंडो फेर'र बैठगी पण कान मांड मेल्या हा...।

''तो अबै चालां ?'' बो कैयो अर म्हारै मांयनै सूं आवाज आयी, ''घड़ीक और रुकज्या।'' पण बैरी किस्या रुकै! तीनूं केस काउंटर कानी चलाग्या। म्हैं पीठ जरूर फेर राखी ही, पण म्हारो ध्यान भींत पर लाग्योड़ै आईनै कानी हो। बो काउंटर पर पांच-छव मिनट खड़्यो रैयो, पण अेक बार भी बावड़'र लारै नीं देख्यो। 'मरोड़ तो देखो बढऊ री... !'' जियां ई बो रेस्टोरेंट सूं बारै निकळ्यो, म्हैं भी पर्स लेय'र बीं रै गेल चाल पड़ी।

तीनूं अेक कार कनै खड़्या बतळावै हा। इण राज पर सूं भी पड़दो हट्यो कै बा लुगाई बीं री जोड़ायत नीं बल्कै अेक कवयित्री ही, जिकी मोट्यार सागै आं सूं मिलबा आयोड़ी ही अर म्हारी ऊरमा पाछी बावड़ी। जीव ठिड्डैसर आयो। मन ई मन सुगन मनाया अर म्हैं साड़ी भीतर ल्हुकेड़ी फूलपातड़ी बारै काढ ली। आ ईज तो अेक चीज ही, जिण सूं कदै म्हारै प्रेम री नींव पड़ी अर तलाक हुयां पछै भी गळै सूं नीं काढी। बाकी उणसूं जुड़ी चीजां सूं आंतरो कर लियो हो। म्हैं जाण-बूझ'र अवोइड करती उणरै नेड़ै सूं इयां निकळी, जाणै गढ जीत लियो व्है।

बीं आखी रात म्हैं पसवाड़ा फेरती रैयी, दिनबीती रा चितराम आंख्यां आगै घूमता रैया। नींद राणी जाणै कठै बळगी ही। भाखपाटै-सी उठी अर करन नै उठावती कैयो, ''बेटा, अेक कोपड़ी चाय बणा ल्या।''

''ऊहूं सोवण दै मम्मा!'' कैय'र बो तकियो आडै लगा लियो अर ऊंघै लाग्यो। म्हैं उणरो ललाट चूमती मस्को मार्‌यो, ''आज रै दिन तो मत नट लाडी, जा म्हारो माथो

दुखै है। सगळी रात बाबोजी री जात इयां ई बैठ'र काटी है। जा बेटा, अेक कप चाय बणा दे, बस।'' पण बो सैल्यो ई नीं। छेवट म्हैं ई उठ'र रसोई कानी चाल पड़ी।

करन स्हैर री सै सूं मूंघी स्कूल मांय पढै। खूब मन लगाय'र पढै। गेलैसर आवै अर कदैई म्हनैं परेसान नीं करै। अेक तलाकशुदा औरत सारू आ कोई कमती बात थोड़ी ही, पण अक्सर अतीत नैं लेय'र मन दुखी होय जावतो। आंख्यां री गगरी मत्तै ई झरणै लाग जावती। ठा नीं कितरी ई देर सूं आईनै आगै बैठी-बैठी रो धापी, पण बाळणजोग आंसूड़ा तो थमण रो नांव ई नीं लेवै। काळजै में हूक-सी उठै ही अर हिवड़ै री पीड़ नैणां रै रस्तै बैयां ई जावै ही। करन जियां ई मांयनै बड़्यो, म्हैं फट सूं आंख्यां पूंछी अर मुळकणै री अेक्टिंग करती बोली, ''तूं हाल अठै ई है? मौसी नैं ल्यावै हो नीं?''

''तूं रोवै है मम्मी?'' बो म्हारै चेहरै नैं आप कानी घुमावतो सीधी म्हारी आंख्यां में झांकतो-सो पूछ्यो।

म्हैं अेकर तो हड़बड़ायगी... सागी बै ईज तेवर, आंख्यां में आंख घाल'र बात करणो। म्हैं अठीनै-बठीनै देखती कैयो, ''म्हैं क्यूं रोऊं, रोवो म्हारा बैरी... पण तूं जल्दी जा, थारी दोनूं मौसियां नैं लिया, तावळो-सो?''

''मम्मा, तूं आ फूलपातड़ी काढ'र फेंकै क्यूं नीं?'' बो झल्लावतो सो म्हारली गैल्यानै हुयोड़ी फूलपातड़्यां नैं खोसै लाग्यो, ''अबार री अबार काढ आंनै।''

''तूं छोड आंनै... कित्तो सारो काम पड़्यो है, थारा भायलां नैं फोन करयो कै नीं?''

''पैली आंनै काढ'र बगा परै!''

''छोड आंनै अर काम कर कोई!'' म्हैं आकरै सबदां सागै कैयो, पण बो तो आज पड़ूत्तर देवण री जग्यां सिलगता सवाल छेड़ चुक्यो।

''तूं हाल भी बीं आदमी नैं नीं भूली, जिको अेक छिण में थारै-म्हारै ठोकर मारग्यो। कदै खोज-खबर भी लेणो जरूरी नीं समझ्यो कै मरग्यो कै जीवै है?''

बो केई देर तांई इयां ई बोलतो गयो। आपरै पापा री तरियां... सागी बां ईज बगावती तेवरां सागै अर पछै बरड़ावतो कमरै सूं बारै उठग्यो। म्हैं भींत हुयोड़ी काच आगै बियां ई बैठगी।

झुंझुणूं बस-अड्डै माथै ऊभी म्हैं म्हारी साथण रत्ति सागै उणनैं उडीकै ही। डील में सणसणाट-सी हुयरी ही। काळजो धकधक कर रैयो हो... म्हारी चौकस निजरां च्यारूंमेर देखण लागरी ही, इण अभिमान में कै देखतां ई पिछाण लेऊंली। पण बै अचाणचकै ई जिण भांत सांमनै आय'र म्हारो नांव लियो अर म्हैं सरम सूं लाल होवती रत्ति रै लारै लुकगी। गोरो रंग, लांबो डील, पण बेजां ई माड़ा... पछै म्हारै चेतै आयी कै जिको मिनख दो बरस में आपरा जणीतां नैं खोय दिया, बो भलो-चंगो कियां होय सकै...

बांरी हालत देख'र म्हारो जी बळ्यो अर म्हैं भावी पत्नी बणगी बस। खूब बातां हुयी... अठै औ भी ठा पड़्यो कै धीर-गंभीर दीखण वाळो ओ सख्स खूब मजाकिया भी है। आसै-पासै रै माहौल में हांसी रा इस्या रंग घोळ देवै कै रोवता भी हांसण लागज्या।

मन ई मन खुद री चॉइस पर इतरा उठी म्हैं। ज्यूं दिन बीत्या, प्यार परवान चढतो गयो अर अेक दिन म्हारै गळै में फूलपातड़ी पैरावतां कैयो, ''इणनैं गळै सूं कदैई मत काढजै।'' बो दिन है अर आज रो दिन प्यार री मंजल ब्यांव तक पूगी। खूब प्यार अर मान-सनमान मिल्यो... आपरी जिंदगाणी री पूरी किताब खोल'र मेल दी। विस्वासघातकां रा धावा अर समय रै घावां सूं इण आदमी रो मठ मार राख्यो हो। धायै-धाप्यै घर में बिखो-सो भोगै हो। म्हारै आवतां ई रूंवो-रूंवो खिलग्यो अर बांथ घाल'र टाबर ज्यूं रोवतो केयो, ''जिंदगी इत्ती सलौनी भी व्है, म्हनैं तो ठा ई नीं हो... म्हारी बेरंग जिंदगी नैं सतरंगी बणाणै खातर भोत-भोत आभार... अब सूं आ जिंदगी फगत थारी है।''

ठा नीं म्हारै आवण सूं उणां रै जीवण में कित्ता रंग घुळ्या पण इस्यो जीवणसाथी पाय'र म्हैं अवस निहाल होयगी। ब्यांव नैं दोय बरस बीत चुक्या हा, पण न आंरै प्रेम लुटावण में कमी आयी... न म्हारै प्यार लूटण में...। जद पैलो टाबर खोय'र म्हैं बावळी-सी होयगी, चीरा-फाड़ा करै लागी तो आंरो प्यार ई हो, जिको म्हनैं बीं दरदसूं उबारियो अर पछै करन रो जलम हुयो... खुशियां ओजूं पांख पसारी अर जीवण री फ्लाइट उड चाली। हरेक अबखाई रो दोनूं रळ-मिल'र सामनो करियो, पण पछै शक नांव रो रोग इस्यो लाग्यो कै बस्यो-बसायो संसार खुद ई बाळ बैठी। चुगलखोर समदर नैं भी बाळ नाखै। म्हारै भी च्यारूंमेर चुगलखोरां री खरपतवार उग्याई अर इसी ऊगी कै उठतां-बैठतां, सोवतां-जागतां संदेह रा अैड़ा कांटा रोप्या... कै जिका दोय डील में अेक प्राण ज्यूं बसता, बांरा डील न्यारा, प्राण भी निरवाळा होयग्या। म्हारी आंख्यां पर गळतफैमी रो पड़दो इस्यो पड़्यो कै म्हैं बिना सोच्यां-समझ्यां अेक दिन पुलिस थाणै जाय'र दावो ठोक दियो कै म्हारै पति रा केई औरतां सागै संबंध है। म्हनैं तलाक चायै...।

पण म्हैं औ कदम तुरत-फुरत कोनी उठायो हो। करन रै हुयां पछै बै आपरी अर म्हारी सारी सेविंग खरच कर काढी। म्हैं जद भी इण बाबत पूछती, बै मून धार लेंवता। बधता खरचा अर च्यारूंमेर सूं घाटो ई घाटो। म्हारै कीं समझ में नीं आय रैयी ही कै कांई करूं? अर रैयी-सैयी कसर आंरो जॉब छूट'र कढगी। म्हारै जॉब जावण सूं बेसी चिंता करन रै भविस री ही... अर जद घर में आर्थिक तंगी रो पगफेरो व्है तो प्यार, रिश्ता-नाता, विश्वास अर धीजो लारै छूटण लाग जावै। पछै तो घर में गोधम ई होवै। अेक दिन ठा पड़ी कै श्रीमान मुंबई री अेक छोरी रै प्रेम में पड़ चुक्या है अर सगळा पईसा उणी माथै लुटा रैया है।

पैली तो म्हनैं बिलकुल ई भरोसो नीं हो कै इण आदमी रो औ रूप भी हो सकै। पण जद मोबाईल री कॉल डिटेल देखी, तो म्हारो संदेह पक्को होयग्यो। बीं आखी रात म्हारी लड़ाई चाली... नीं बोलण चाईजता बै सबद म्हे दोनूं अेक-दूजै नैं बोल्या अर औ कळेस बधतो ई गयो। म्हारै वास्तै इस्यै भरतार सागै छिणेक भी रैवणो दोरो होयग्यो हो। इण वास्तै अेक दिन म्हैं बांनै बिना बतायां करन नैं लेय'र म्हारै पीहर आयगी। आ बात बांनै ठा पड़ी तो बै मनावण खातर आयग्या। घणी सफायां दी, समझावणी करी, मनाणै रा जतन कर धाप्या, पण म्हारै मन में जिको फरक आय चुक्यो, बो नीं मिट्यो...। घरकां भी बांरो ई पख लेंवता बोल्या, ''थे चिंता मत करो, दो-चार दिन में मत्तै ई आय जासी।''

म्हैं समझ चुकी ही कै अठै रुकणै रो मतलब हो, राजीपो अर म्हैं उण आदमी सागै कोई राजीपो करण नै त्यार नीं ही। दो-तीन दिन बाद म्हारै टाबर नैं लेय'र मायकै सूं झुंझुणूं आयगी। अठै किरायै पर अेक कमरो लेय'र रैवै लागी। अेक दिन आपश्री झुंझुणूं आ पूग्या अर बै ई सफायां देवणी सरू कर दी। म्हैं साफ-साफ नटगी। बोली, ''म्हारै कानी सूं तूं आजाद है। जा, जी तेरी जिंदगी।''

''ठीक है, जे तूं आ ईज सोचली तो म्हैं भी झांकण नै कोनी आऊंला, पण म्हारो छोरो म्हनैं देय दै बस...।'' अर ठड्डै सूं करन नैं खोस'र सागै लेयग्या। अब बात म्हारी या म्हारै स्वाभिमान री नीं ही, बल्कै म्हारै बच्चै री ही... जिको आदमी म्हारी पीठ पीछै लंगवाड़्यां सागै रिस्तो राख सकै, बठै म्हारै करन रो कांई भविस हो? अर म्हैं पुलिस केस कर'र करन री कस्टडी मांग ली। म्हनैं आछी तरियां याद है, उतरयोड़ै चेहरै सागै करन नैं लियां बै थाणै हाजर हुया हा। बांरी हालत देख'र पेट तो घणो बळ्यो, पण मन नैं काठो करती इत्तो ई कैयो, ''अेक-दो दिन में तलाक रा कागद मिल जासी।'' अर करन नैं लियां पाछी झुंझुणूं आयगी। दिन बीत्या, महीना बीत्या अर देखतां ई देखतां साल बीतग्यो। न कदै म्हैं सुध ली, कदै बै फोन कर्‌यो। हां, डायवोर्स पेपर साइन कर भिजवा दिया अर लिख्यो, ''खुस रैवो।''

म्हैं म्हारी दुनिया में रमगी अर बै? च्यार साल होयग्या अर आं सालां मांय बांरी कोई खोज-खबर नीं लागी। अेक दिन बैठी-बैठी रै कांई जची कै फेसबुक माथै उणनैं सर्च कर्‌यो... जदकै म्हैं आपै ई बांरा मोबाईल नंबर डीलीट कर्‌या, फेसबुक सूं भी अनफ्रेंड कर दिया। बीं रै बाद न तो कदै बांरी पोस्ट दीखी, न कोई फोटू... अेक दिन देवनागरी में बांरो नांव टाईप कर्‌यो अर जियां ई बांरी आईडी दीखी, झटाक सूं फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज दी। पछै कीं सोच'र पाछी कैंसिल कर दी। प्रोफाइल में करन री फोटू लाग रैयी ही... करन रै हर जलमदिन री पोस्टां साथै मरमीली कवितावां लिख्योड़ी ही। औलाद वास्तै बाप री तड़प पढ'र म्हैं ओजूं रोवणखारी होयगी। अर पछै म्हैं करन सूं म्हारी अेक फेक आईडी बणवाई अर लाडेसर सूं निजर बचाय'र बांनै मित्रता अरजी

भेजी। पण बै एक्सेप्ट नीं करी... म्हैं अक्सर बांरी प्रोफाइल रो विजिट करती, पण बांरी नूंवी, ताजा फोटू कदैई धकै नीं चढी। म्हैं देखबो चावै ही, कै बै किस्याक दीखै ? कांई करै अर म्हारी जग्यां बांरी जिंदगी में अबै कुण है ? पण कविता, कहाणियां, आर्टिकल रै अलावा कीं लाधतो ई नीं।

केई बार सोचती कै कठैई म्हैं गुनाह तो नीं कर दियो अर पछै खुद ई खुद नैं समझावती कै गुनाह तो थारै सागै हुयो है। पण भोत टेम बीत्यां पछै ठा लागी, कै गुनाहगार बै नीं, म्हैं ईज ही। जद बेरो पड़्यो कै पईसा छोरियां सागै अय्याशी कर नीं उडाया, बल्कै मुंबई में आपरै भायलां सागै पार्टनरशिप में अेक फिल्म रै निरमाण पर लगाया हा अर पार्टनर धोखो करग्या। इण बात रो बांरै गैरो सदमो लाग्यो अर जिण अबखी घड़ी में म्हनैं बांरै सागै होवणो चाईजतो, म्हैं मरज्याणी सक री मारीबांनै दर अेकला छोड नाख्या अर जद सूं म्हैं भी पिछतावै री अगन मांय अेकली बळण लागरी हूं। म्हैं जिण सख्स री आखी दुनिया हुया करती, उणरी बिखरी, बेरंग जिंदगी रा सबरंग हुया करती ही, आज खुद आसहीण, रंगहीण हो चुकी ही। सक रो जरा सो बारूद प्यार अर विस्वास रै म्हैल रा चींथड़ा कर दिया, अरमानां रा लोथड़ा कर दिया। काश, अेकर बांरी बात सुण लेंवती, काश, बै म्हनैं सगळी विगत पैली बता दी हुंवती, काश... काश...

अणसमझी अर झाळ-झाळ में आदमी कित्ती ठाडी भूल कर बैठै, कै आंसू अर पिछतावै रै सिवा कीं नीं बचै। सोनल संसार रै ठोकर मार, नरकवाड़ो भोगण नै मजबूर होवणो पड़्या जद जायनै चेतो आवै कै औ कांई होयग्यो... म्हारो तलाक हुयां दस बरस होयग्या। भोत ई मामूली-सी बात ही, बात जे ठाडी भी हुंवती तो जप जावती, पण म्हांनै तो म्हारै ई सुख में लाय लगाणी ही। पण राम रो पूरो, बो भी कम थोड़ी हो... म्हैं तलाक मांग्यो अर फट दे भी दियो... कांई म्हारी सागी बा ईज जूण, बै ईज पल-छिण पाछा बावड़ सकै ?

◆◆

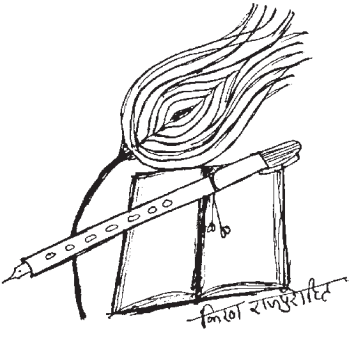

लघुकथा

प्रमिला सोनी

कठपूतळी

दीपू दौड़ती-दौड़ती आंगणै में आयी, ''मां, मां! बारै कठपूतळी रो खेल देखावण वाळो आयो है। चाल नीं मां, बो पईसा लेय'र खेल देखावै। म्हनैं ई देखावै नीं मां!'' म्हैं रसोड़ै सूं आंगणै में आई तो दीपू साड़ी रो पल्लो पकड़ लियो। साथै ले जावण री जिद करण लागी, ''मां, थूं पईसा लेय'र म्हारै साथै बारै चाल, म्हैं खेल देखसूं।''

''दिन नीरो चढग्यो। रोटी रो टेम होवण लाग्यो। दादा-दादी रोटी री बाट जोवैला। थूं पईसा लेयजा अर खेल देख आव।''

''नईं मां, थूं म्हारै साथै चाल।''

उणरै हठ रै आगै म्हारी अेक नीं चाली। पल्लो खींचती बा म्हनैं बारै लेयगी। बारै जाय'र देख्यो तो नीरी भीड़ लाग्योड़ी ही। टाबरां री अर छोटा-बडा सैंगां री। सैंग जणां नैं खेल देखण रो उमंग छाय रैयो हो। आ बात भी साची ही कै खेल देखण रो मन म्हारो भी कर रैयो हो, जिको पूत रै मिस पोळी म्हनैं ई मिलगी। सैंगां सूं मिल'र हिवड़ो राजी व्हियो। सब लोग जाजम माथै बैठग्या। कठपूतळी रो खेल सरू व्हियो। अेक-अेक कर'र कठपूतळियां पड़दां सूं बारै नीचै उतरण लागी। कोई राजा नै कोई राणी, सिपाही, भिस्ती अर नाच देखावण वाळी। बीजा ई मोकळा चरित्र हा। म्हारी निजर नाच देखावण वाळै माथै ठैरगी। बीं रै हाथां री आंगळियां में डोरा पोयोड़ा हा। सैंग डोरा कठपूतळी वाळा रै हाथ में। बो ज्यूं डोरा हिलावै त्यूं कठपूतळी नाचै। बीं रो करतब देखतां-देखतां म्हैं कदै म्हारै जीवण रै विचारां में डूबगी, ठा ई नीं पड़ी। घर री दिनचर्या में सब रो हुकम हिलावती, उठ-बैठ करती, छोटा-मोटा सगळां रै इसारै माथै नाचती कद रात पड़ जावै, ठा ई नीं पड़ै। खुद वास्तै सोचणै रो टेम ई नीं मिलै। सब रै राजीपणै में राजी रैवणो सीख लियो हो। मन भवसागर में हिलोरा लेंवती-लेंवती रे माथो भरणाट करण लागग्यो। बस, अबै माथो फाटसी। म्हनैं लाग्यो कै म्हैं इण कठपूतळी जैड़ी ईज हूं। इणमें अर म्हारै मांय कोई फरक नीं है।

◆◆

***अध्यापिका (राजकीय) एल-2 हिन्दी** मो. 9529977781*

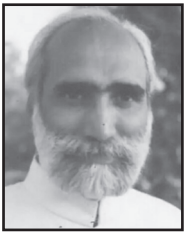

मनोहर सिंह राठौड़

बादर जी

म्हारै नानाणै रो परिवार घणो मोटो नीं हो। पण बां दिनां आखो गांव ई आपणो होया करतो। कुटम-कबीलै रा तो अेक परिवार रै जियां होया करता हा। कोई कठै, कोई रै अठै बैठ्यो है, रोटी री बगत होयां बठै ई जीम लिया करतो। अपणायत री बगती पून में परायैपण री बदबोय रो लवलेस ई नीं हो। जात-पांत रै भेद री भींतां नीं खेंचीजी ही। म्हारा दो मामोसा मांयला बडोड़ा खुल्लो खरचो राखता, इण सूं गांव रा सगळा जणा बांनै गांव ठाकर री जियां रामरमी करता। बीं रळियावणा बास में बहादुर सिंह, जकै नैं आखो गांव बादर जी कै बादर भायो कैया करतो, ओ म्हनैं सगै मामोसा रो बेटो भाई जियां ई लखावतो। म्हारा मा'सा पीहर में सगळां सूं मोटा हा, इण वास्तै म्हैं जद ई नानाणै जावता, सगळा मिलबा आया करता। बां दो-च्यार दिनां बठै घर में मेळो मंड्यो रैया करतो। हांसी-ठठ्ठा, बातचीत, सोचा-विचारी, ओळमा-समझावण, भली-भोळावण, घाटा-नफा, सुख-दुख री घणी ई बातां बिलोईजती। बादर भायो घणी बार आया करतो। कीं इणनैं मिलबा रो कोड रैया करतो अर साथै ई बातां रो जबरो कारीगर हो। बडां रा कांण-कायदा राखणा इण सख्स री रग-रग में जच्योड़ा हा। आ जरूर ही कै पांचवीं-दठी पढ्योड़ा बादर भाया में खळ सूं तेल काढणै री कीमिया लकब ही। इण वास्तै किण सूं कित्तो मेळजोळ राखणो, किणनैं आव-आदर देवणो, इण बात रो पक्को पारखी हो। पुराणी बातां, लोककथावां, कैबतां-किस्सां रो पक्को रसियो हो। तिल रो ताड़, राई रो पहाड़ बणावण में माहिर हो। कनै सूं कीं ठगायां बिना, मिठबोलो अर घटतोलो तो हो पण जकै सूं मेळ-मिलाप राखतो बीं वास्तै आधी रात नै ई त्यार। डर-भय नैं ओ कदै जाण्या कोनी। इणां रा मां-बाप आपरा सगळा टाबरां सूं अणूतो सनेव राखता पण अेक साळ, तिबारा रा घर में आं आठ-दस भाई-बैनां नैं सोवण रो आसरो बारै रा आंगणा सिवाय मांचा-मंचली, सिरख-पथरणा कठै सूं देय सकै हा।

421-ए, हनुवंत-ए, मार्ग-3, बी.जे.एस. कॉलोनी, जोधपुर-342006 मो. 9829202755

इण गिरस्ती रो घींसाघरड़ो इयां ई चालतो रैवतो पण चढती जवानी बादर भायो च्यार-पांच किलोमीटर अळघी अेक कॉलेज में चपड़ासी री नौकरी रै लटूमग्यो। पछै पैरण-ओढण रो ओप, बोलचाल, वैवार में बांकपण, फुटरापो, हुंसियारगी भळकै लागी। घर में ई दो-च्यार जिनसां ढंग री बपराईजी। ओ भाई ड्यूटी रो पाबंद हो। दिनूगै सात बज्यां पूगणो होवो भलांई कै रात दस बज्यां चौकीदारी करणी पड़ो, अेकदम टेम सूं पैली हाजर। अंधारी रात में ई अेकलो सूनी जोहड़ी रै बीचोकर बेधड़क नीसर जाया करतो। बियां लोग कैया करता, जोहड़ी में भूत फिरै। पण ओ डर नांव रा राकस री कदेई परवाह नीं करी। आं बातां नैं अंधविस्वास ई मान्या।

अेकर चौमासै री मेह-अंधारी रात में जोहड़ी रै मारग बीचै पूग्यां दो अपरोगा मिनख साम्हीं आवता दीख्या। अेकर बादर जी रै रूंवाळी उसी हुई पण दूजै छिण फरसी री पकड़ मजबूत करतां दाकल करी, ''कुण है रे?'' बीं बगत ई बिजळी रै पळाकै में फरसी चमकी। बै आदमी डोडा नीसरता रामरमी करी, ''म्हैं रस्तो चूकग्या हा।'' इयां कैय'र बै आपरै मारग अर बादर जी आपरै मारग। जद पछै आंरो हौसलो और ई बधग्यो।

चोड़ा हाडगोडां रो पळकतो गेंहुवै रंग रो ओपतो डील, पूरा गालां नैं ढकती गळमूंछां, माथै रै फूटरो मरोड़दार साफो, सांतरा धोयोड़ा धोती-कमीज, पगां में देसी पगरख्यां, हाथ में तेल पायोड़ी काळै चीकणै बैंडै री फरसी लियां बादर जी इयां लखावतो जाणै म्यूजियम में लाग्योड़ी पेंटिंग सूं ठरकैदार ठाकर रो चितराम निसर परो बारै आयग्यो होवै। आ फरसी इणां री पिछाण रै साथै-साथै रात में अेकला री आव-जाव री बगत भरोसैमंद भाई जैड़ो साथ निभाया करती।

कॉलेज रा सेठ बरस-दो बरस में आवता जद बादर जी री ड्यूटी सेठां री हेली माथै ई रैया करती। आंरी बोलचाल, साफ-सफाई, काम री हुंसियारगी सूं सेठां रो परिवार घणो राजी रैवतो। बां कॉलेज रा प्रिंसीपल साब रो बादर जी जीवणो हाथ, बूढै री लाठी, बीज रो बाजरो ई हो। आ साची कै दोन्यां रो मेळ सांतरो बैठग्यो। मन मिल्यै रा मेळा, नईं जणां आदमी अेकला ई समझो। प्रिंसीपल साब खुद सौ टका खरा सोनो हा। बिना मतलब कॉलेज रो अेक रिपियो ई खरच नीं होवण दिया करता। आंकस ई जबरो हो। पढबाळां नैं बिना भेदभाव रै आगाऊ सुविधावां देय आगै बधणै रो मारग बतावता। इण वास्तै ईमानदार, ड्यूटी रो पाबंद बादर जी हदभांत बांनै पसंद हो। अेकर निकरमा छोरा कॉलेज में हड़ताल कर दी। आपसरी में ठोका-पीटो होयग्यो। कॉलेज में तोड़फोड़ रो डर ई बधग्यो अर लेक्चरार, प्रिंसीपल साब नैं बेइज्जती रो डर लागण ढूकग्यो। आडै बगत में बादर जी आपरी अक्कल-ऊरमा रै पाण बेधड़क आपरी फरसी लियां सावचेती सूं पूरी ड्यूटी करी। प्रिंसीपल साब रै साथै छियां रै जियां रैय घरां सूं ल्यावण अर छुट्टी पछै घरै पुगावणा, इणां रो काम ईज हो। बदमास, नंबरी, नसाबाज, नालायक छोरा भी बादर जी साम्हीं साव गऊ कियां बण जावता, आ बात म्हैं आजतांणी नीं समझ सक्यो।

अेकर यूपी रो अेक बड़बोलो लेक्चरार कोई सिकायत लेय'र प्रिंसीपल साब कनै पूग्यो। बीं री बात नीं मानता थकां बादर जी री बात नैं महताऊ मानी। तद ताव में आयोड़ो बो लेक्चरार कैय बैठ्यो, ''आप मेरे सामने एक चपरासी को महत्त्व दे रहे हैं?''

इयां सुण्यां प्रिंसीपल साब रो पारो चढग्यो। मूंडो रातोचुट होयग्यो। बै झट करता बोल्या, ''तुम्हारे जैसे शाम तक सत्तर भर्ती कर सकता हूं मगर बहादुर सिंह जैसा कहां मिलेगा? वो खरा सोना है। राजपूती आन-बान का आदमी है। इसमें तुम्हारी गलती है। उससे माफी मांगो।''

आ सुण'र बो लेक्चरार सूनो व्हैग्यो। सेवट बीं हेकड़ीबाज लेक्चरार नैं बादर जी सूं माफी मांगणी पड़ी। बादर जी, आदमी घणो गुणी हो। स्कूली पढाई आगै नीं कर सक्यो, पण अक्कल में अव्वल हो। कोई पूजापाठ करबाळा, ग्यानी-ध्यानी, कथा-पूजा करबाळा, डोरा-जंतरमंतर करबाळा, जोगी, जोतसी, बैद-हकीम, कलाकार-गायक, ट्यूसन में हुंसियार, नामी सेठ-साऊकार, गोठ-घूघरी रा जिमाकड़, कसरती पहलवान, सांतरो सस्तो सोदो-सुलफ देबाळा दुकानदार इत्याद घणी बातां री सांतरी जाणकारी इणां रै जीभ हेटै ही। आपरा चौड़ा हाड अर पतळी रास री लांबी-लांबी टांगां सूं लांबा डग भरता चालता जद मामूली मिनख तो बाको फाड़्यां कठैई लारै रैय जावतो। इणां रै बरोबर चालबा में आछा-आछा नैं छींकणी आवती।

आपरै नानाणै जावता जद किरायो बचावण नैं तड़काऊ रोटी जीम, आपरी फरसी रै भरोसै धर मजलां, धर कूचां लांबा-लांबा डग भरता चालता जद बीस कोस रो पैंडो खुद निमळो पड़ ज्याया करतो। पाणी में तिरती बतक कै तिरती नाव री जियां बरणाट करता बगता। सिंझ्या नानाणै पूग बठै ई रोटी जीम्या करता। अेकरको ऊंट ई आपरी चाल में गुचळकी खाय सकै पण बादर जी रो कांई थाकै?

बादर जी रै घर में मोडा घणी, मढी सांकड़ी जिसी बात ही। घणा मिनखां री घणी जिम्मेवारी ही। अै आपरी पैठ रै पांण होळै-होळै दो-तीन भायां नैं सेठां री हेलियां रा पौरायती रखवा दिया। खेती दूजा भाई संभाळता। इणां रा जीसा जवानी में ई कदै काम रै सावळ-सी हाथ नीं अड़ायो, तो ढळती जवानी में कांई न्याल करता? बै बातां रा रसिया, पक्का मैफिलबाज हा। स्यात ओ हथाई रो गुण बादर जी में आपरा जीसा सूं ई आयो। आपरो अेक सांतरो साफो कड़प लगायोड़ो, जान-बरातां वास्तै थैला में त्यार राखता।

जद-कद बगत मिलतो बादर जी लोगां रा मांचा भी बणता। छान-छपरिया बांधता। सूत-ऊन रा ढेरा कात'र जेवड़ा बंटता, दरी-तोलियां रै दोन्यूं पसवाड़ै फळवा गूंथणै रो काम ई करता। आं कामां सूं बच्यो मूंज-निवार छान रा बच्योड़ा पूळा अर कीं रिपिया ई हाथ लागता। काम भलांई खेती रो हुवो कै कोई बुणगट रो, इणां रा काम में अेक सांतरो सुथरापण हो। अैड़ी ई साफ-सफाई आपरा पैराण में सदा राखी। धोय-निचोय

सांवट'र बिछावणा हेटै दाब्योड़ी कमीज उस्तरी घुमायोड़ी-सी लागती। कपड़ां रै कठैई कोई दाग नीं लाधतो। बोली में बांकपण रो अेक न्यारो फुटरापो अर मिठास हो। हांसी-ठठ्ठा री बगत सगळां नैं हंसाय छोडता। दूजै कोई री बात में हुंकारो अर हांसी रै मेळ सूं बात रो रंग जमाय दिया करता। आसंग-पासंग रो कोई कीं जिनस मंगवावतो बा सिंझ्या जरूर ल्याय पुगाणै में सदा आपरो फरज समझ्यो। इण सूं मन में अेक सुख हो कै सगळा दुकानदार आ समझता, बादर सिंह रोजीना सामान नगद पईसां सूं मोलावै। अै ठाठदार घर अर सांतरै ब्योहार रा मिनख हा। जद कै बाबाजी री तो हवा ई हवा ही।

इण छोटै कस्बै में अेकाअेक मोटा अफसर प्रिंसीपल साब रा खास आदमी रै रूप में जाणीजता बादर जी रो सांतरो सिक्को जम्योड़ो हो। बियां भी बै आखी उमर दूजां रा खेल-तमासा जमावता रैया। कस्बै में कोई सांतरो बाजीगर, कठपूतळी वाळो कै कोई और ऊरमावान मिनख आवतो, बादर जी बीं रो प्रोग्राम कॉलेज में सैट करवा दिया करता। रामलीला, रासलीला, ब्यावला, बंचवाणा, बगड़ावत कै डूंगजी-जुंवारजी, पाबूजी री पड़ गांव में बंचावण री व्यवस्था में अगाऊ रैया करता।

बां दिनां बादर जी नैं देख्यां इयां लखावतो कै ओ सख्स कद सोवै अर कद जागै? तारां री छियां उठ, न्हाय-धोय दूजां रै अठै सूं दूध दुवारी करवाय, गिरायकां रै घरै दूध नैं पुगाय, सात बज्यां कॉलेज री ड्यूटी में सगळां सूं पैली हाजर। आखै दिन री ड्यूटी। बीचै-बीचै प्रिंसीपल साब रै कै रिस्तेदारी-भायलाचारी रा बजार-स्कूल-अस्पताळां रा काम। सिंझ्या घरै जावती बेळा लोगां रा सामान मोलावणा। गांव में पग दियां पछै आयोड़ा पांवणा, बैन-बेटी कनै बैठ'र हथायां करणी। रोट्यां जीम्यां पछै हांसी-ठठ्ठां में बैठणो, कै गांव में चालती रामलीला, बंचती पड़ में पूगणो। लोगां रै अठे ब्यांव-सावा, सतसंग-कथा में साथ निभाणो। वार-तिंवार, मिंदर-देवरा में न्हाय-धोय पूगणो अर चंदण री टीकी भेळो म्हाराज रै हाथां आसीस लेवणो कदै नीं भूल्या। कांई ठा कित्ता काम इणरै ओळूं-दोळूं हा अर कित्ता ई काम इणनैं उडीकता रैवता। इयां लखावतो जाणै ओ हाडमांस रो मिनख नीं होय, कोई 'स्टीलमैन' ईज है।

ओ भाई टाबरां में टाबर, जवानां में जबरो जवान अर बूढां कनै घणो समझवान बण'र पुराणी बातां, इतिहास कथावां कैवतो-सुणतो। जठै बैठता बठै सगळा आपरी उमर रा ई मानता। साम्हीं धक्यां चिमकती तीखी-तच्च पाणीदार बोलती-बतळाती आंख्यां, धोळा-धप्प दांतां सूं उफणती हांसी, समझदार-गुणवान जैड़ो चेहरो, अेकर निजरां मिलतां पाण सांमला री निजरां चढ जाया करता। ब्यांव-सावै में गयां मुळकता होठ, गळमूंछां री आंट, सलीकै सूं सज-धज साथै सोवणै साफै रा पेच जचायोड़ा, धोती री प्लेटां री धजक, कांधै लटकतो सांवट्योड़ो तोलियो, पालिस सूं पळपळाट करती पगरख्यां, म्यूजियम में टंक्योड़ो होवै वैड़ी फरसी री डिजाइन, आं सगळां री ओप इणां नैं अेक इधको मिनख

बणाय दिया हा। छोटा-मोटा गांवां रा ठाकर, नामी सेठ-साहूकार ई अेक-दो बार मिल्यां पछै आंनै जाणै लाग्या। आपरी इण जाण-पिछाण सूं आपरै मन-मिलतारू मिनखां रा अटक्योड़ा काम करवाय लिया करता।

आं दिनां खासा बेमारी में झिल्योड़ा बादर जी आपरै हाथां, सूत कात'र बण्योड़ी घुंडीदार पिलंग माथै दरी बिछायां सूता रैवै। बा तीखी कोरां री चितरामां में मंड्योड़ी जैड़ी गळमूंछां री ठरकैदार छिब कठैई आळमेट होय चुकी। आंख्यां ऊंडा खाडां में जाणै गम्योड़ी उण मुळक नैं ढूंढती होवै। आंख्यां सूं रळकता पाणी रो इलाज डाक्टरां कनै कोनी, ना बीं तोलिया में बांनै पूंछण री ताकत। अेक दिन में बीस कोस पगां रै पांण चल्यो जाया करतो बो ई मिनख धांसी रा धचकां सूं फंफेड़ीज्योड़ो अब आपरी बैठक सूं बारै मिनखां बिचै पूगण नै बीस पांवडा चालण में ई झिझकै। बजार रा सगळां रा काम फटकारै ई कर दिया करता बै बादर जी आज बात करणै सारू तरसै। कदै-कदै साम्हीं टंक्योड़ी बीं बगत री फोटू नैं देख'र मुळकै, पछै तकिया हेटै मेल्योड़ी फरसी रै हाथ अड़ाय आंख्यां मीच्यां आपरी जवानी री घाटियां में ऊंडा उतर जावै। आपरी कलाकार जैड़ी, लांबी, तीखी, पतळी-पतळी फूटरी आंगळ्यां रा पेरवां माथै अंगूठो अड़ाय गिणता रैवै, मुळकता रैवै।

◆◆

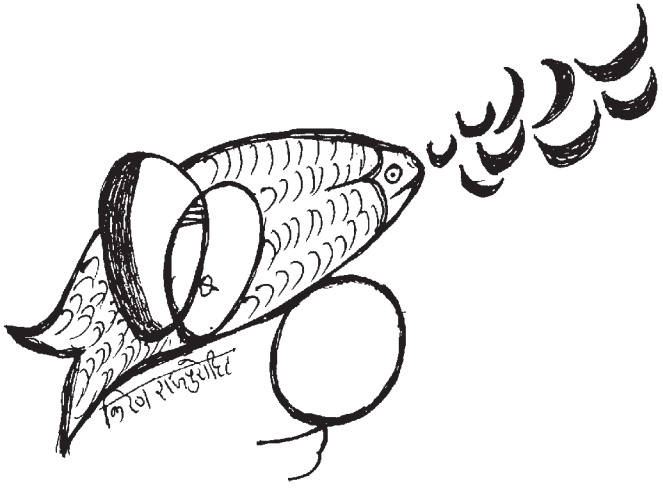

शंकरसिंह राजपुरोहित

पांडुलिपियां रा खजाना राजस्थान रा पोथीखाना

आखै जगत में हस्तलिखित ग्रंथां रै संग्रै अर उणां री सार-संभाळ रा जतन प्राचीन-काळ सूं होंवता रैया है। दुनिया-भर री भाषावां में माखणियै भाठां माथै उकेरीजता आखरां (शिलालेखां) रै साथै ताम्र-पत्रां, ताड़-पत्रां अर भोज-पत्रां माथै आखरां रै अंकन रो काम मानव-समाज री जरूरत मुजब सरू होयग्यो हो। इण काम में भरत क्षेत्र सिरै पंगत में रैयो। भरत क्षेत्र में लेखन कला री इण हथौटी री सरुआत कद सूं हुई, इणरै पुख्ता समै रो प्रमाण तो किणी कनैं कोनी पण अंदाजै अर आपरै अनुभव सूं विद्वान इण रा न्यारा-न्यारा मत थापित करया है।

जगत में ज्ञान रो आलोक सगळां सूं पैलां भारत में उजासित हुयो। इण बात नैं प्राच्यविद्या रा सगळा विद्वान मानै अर ऋग्वेद नैं भारतीय वाङ्मय रो सैं सूं जूनो ग्रंथ सिद्ध करै। मूळत: भारत में आर्य-सभ्यता रो विगसाव पैलां वैदिक संस्कृत में अर पछै संस्कृत, प्राकृत आद भाषावां रै विगसाव रै साथै अविच्छिन्न रूप सूं जुड़्यो है। आं भासावां में लिख्योड़ा हजारूं ग्रंथ भारतीय मनीषा रै विगसाव री ओळ नैं दरसावै अर भारतीय संस्कृति रै अध्ययन सारू अमोलक सामग्री प्रस्तुत करै। [1]

वैदिक वाङ्मय रै साथै-साथै भारत में जैन-संस्कृति रो संबंध भी आदिकाळ सूं रैयो है। अठै ओ कैवणो भी अतिशयोक्तिपूर्ण नीं हुवैला कै भरत क्षेत्र री लेखन कला में जैन-संस्कृति रो व्यापक प्रभाव रैयो है। आदि तीर्थंकर भगवान् आदिनाथ सूं लगायनै भगवान् महावीर रै पछै जैन धरम रै न्यारै-न्यारै संप्रदायां रा जैनाचार्य अर वांरा शिष्यगण लेखन री इण कला में आपरो अवदान दियो है।

जैन आगमां रै मुजब भारत में लिखाई कला री सरूआत पैला जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ सूं होयी। कहीजै कै बां आपरी बडोड़ी बेटी ब्राह्मी नैं लिखणो सिखायो। बात आ ही कै पुराणै जमानै में लोगां री याददास्त इतरी आछी ही कै लिखणै रो काम कम ई पड़तो। गुरु आपरा चेलां नैं मुख जबानी ज्ञान दिया करता हा। ओ धारो सैकड़ूं बरसां तांई चाल्यो। पछै लोगां री याददास्त कम होवण लागी तो शास्त्र वगैरा लिख'र राखणा जरूरी

 ISSN : 2320-0995

होयग्या। जैन ग्रंथां रै मुजब छेला तीर्थंकर भगवान महावीर री वाणी भी करीब अेक हजार बरसां तांई 'मुख बोली अर कान सुणी' परंपरा सूं ई चाली। कहीजै कै पैली बार वीर-निर्वाण रै 980 बरसां पछै सौराष्ट्र राज री वल्लभी नगरी में सगळा शास्त्र सामूहिक रूप सूं ताड़-पत्रां माथै लिखीज्या। [2]

अेकठ लिप्यांकन रै इण महताऊ काज रै बावजूद आज इणां मांय सूं अेक ई शास्त्र री पांडुलिपि जोयां ई नीं लाधै। समै रो वायरो आं ताड़-पत्रां नैं खिंड-बिंड कर दिया या पछै आंधी-अरड़ै सूं अै ताड़-पत्र तूट-फाट'र विलायग्या। फेरूं भी लिखणै अर लिख्योड़ै नैं लिपिकरण रो काम अठै आदिकाल सूं चालतो रैयो है। लिपिकरण रै साथै आं हस्तलिखित ग्रंथां नैं सुरक्षिण राखण रा उपाव भी बगत रै परवाण होंवता रैया। विदेसी आक्रांतावां री निजरां सूं बचावण वास्तै देस में आं पांडुलिपियां रा स्थान-परिवर्तन पण हुंवता रैया।

पृथ्वीराज चौहान री बगत सूं भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियां सारू थार-मरुस्थळ ई प्रमुख मारग हो पण सम रा धोरां वाळो जैसलमेर रो क्षेत्र इण सूं अलायदो रैयो। हालांकै उण बगत राजपूताना नांव रो कोई स्वतंत्र प्रदेश नीं हो। देसी रियासतां रो ईज बोलबालो हो। उण बगत आं आक्रांतावां सूं बचावण वास्तै अतीत अर आगत री दीठ सूं महताऊ पांडुलिपियां नैं कोट-किलां रा ऊंडा भुंहारा (तलघरां) का पछै मठां-मिंदरां कनै सुरंगां बणायनै सुरक्षित राखीजी।

इण बात में कोई दो राय कोनी कै आखै देस में पांडुलिपियां रै संरक्षण में जैनाचार्य अर बांरै शिष्यां री सोझीवान दीठ सिरमौर रैयी है। इतरो ई नीं, अठै रा जैनाचार्य अर उणां रा सुधी श्रावकगण आं ग्रंथ भंडारां में पांडुलिपियां रै संग्रै अर सुरक्षा रै मामलै में धरम, जाति, संप्रदाय आद रो अंगैई भेदभाव नीं राख्यो। औ ईज कारण है उणां रै जैन ग्रंथ भंडारां में भी पृथ्वीराज रासौ, वीसलदेव रासौ, ढोला-मारू रा दूहा, द्रौपदी री चौपइ, रसिकप्रिया, नागदमण, पांडव-चरित्र, रुकमणी मंगळ, गोरा बादळ चौपी, अचलदास खीची री वचनिका जैड़ी राजस्थानी री महताऊ पांडुलिपियां उपलब्ध है।

ग्रंथां री सुरक्षा अर संग्रै री दीठ सूं राजस्थान रा जैनाचार्य, साधुवां, जतियां अर श्रावकां रो प्रयास खास उल्लेख जोग है। प्राचीन ग्रंथां री सुरक्षा अर नूंवां ग्रंथां रै संग्रहण में जितरो ध्यान जैन-समाज दियो उतरो दूजो समाज नीं देय सक्यो। ग्रंथां री सुरक्षा में उणां आपरो पूरो जीवन लगाय दियो अर किणी पण विखमी वेळा में आं ग्रंथां री सुरक्षा नैं प्रमुख स्थान दियो। जैसलमेर, जयपुर, नागौर, बीकानेर, उदयपुर अर अजमेर में जैड़ा महताऊ जैन ग्रथ-भंडार है, बै आखै देस में बे-जोड़ है। [3]

राजस्थान री धोरां धरती नैं सुरक्षित समझ'र जैनाचार्य जिनभद्रसूरि सैसूं पैली जैसलमेर में हस्तलिखित पोथ्यां रै संग्रहण अर संरक्षण रो बीड़ो उठायो। जैसलमेर में

जिनभद्रसूरि ज्ञान भंडार री स्थापना वि. सं. 1505 रै लगैटगै हुई। जैसलमेर रै दुरग में संभवनाथजी रै मिंदर रो निर्माण वि. सं. 1497 में पूरो हुयो। इणी मिंदर में अेकै कांनी अेक तप पट्टिका खुद्योड़ी है।

वास्तव में इण तप-पट्टिका नैं जिनभद्रसूरि ज्ञान भंडार रो ईज अेक महताऊ स्रोत मानणो चाईजै। आ पट्टिका संवत् 1505 में खोदीजी अर उण बगत जैसलमेर दुरग माथै चाचिगदेव रो राज होवणो दरसाइज्यो है।[4]

उण बगत जिनभद्रसूरि ज्ञान भंडार नैं ऊपर सूं देख'र कोई सोच ई नीं सकतो हो कै अठै प्राचीन ग्रंथां रो इतरो बडो अमोलक खजानो है। जैसलमेर रै इण ज्ञान भंडार री घणकरी पांडुलिपियां ताड़-पत्रां माथै ईज लिख्योड़ी है। आं में वि. सं. 1139 री पांडुलिपि 'कुवलयमाला' री अेक प्रति सुरक्षित है। जैन उद्योतन सूरि रै इण ग्रंथ रो हवालो देय'र ई राजस्थानी भासा अर साहित्य रो इतिहास लिखणिया राजस्थानी (मरु) भासा री प्राचीनता रो प्रमाण देंवता रैया है। इण महताऊ कृति रै अलावा इणसूं पैलां वि. सं. 1117 में लिख्योड़ै ग्रंथ 'ओध निर्युक्ति वृत्ति' री प्रति भी जैसलमेर रै इण जैन शास्त्र भंडार में उपलब्ध है। राजस्थान में आ पांडुलिपि सगळां सूं पुराणी मानीजै। यूं अठै वि. सं. 1109 रो अेक 'नागपंचमी कथा' रो पुरजियो औरूं मिलै। काव्यशास्त्री आचार्य दंडी रो 'काव्यादर्श' (वि. सं. 1161) अर आचार्य मम्मट री 'काव्यप्रकाश' (वि. सं. 1215) री प्रति भी इण भंडार में उपलब्ध है। ताड़-पत्रां री पोथ्यां रै पानां रै ऊपर-नीचै लकड़ी री पाटपड़्यां देय'र बांरै अर पांडुलिपियां रै अेक सीध में तीणा काढ'र बांनै जरू बांध्योड़ी है। इतरो काम करयां पछै आं पोथ्यां नैं भाटै री पेटी में सिलपट्यां देय'र घणै जापतै सूं राख्योड़ी है। साच्याणी, राजस्थान में ओ सगळां सूं जूनो ग्रंथ भंडार तो है ईज, अपणै आप में अनूठो पण है।

जैनाचार्यां री इण काम में अनूठी अभिरुचि नैं देख'र राजस्थान रा राजघराणा भी पुराणै ग्रंथां री सुरक्षा सारू सचेत हुया। यूं तो समै-समै राजा-महाराजा कला अर साहित्य रा कद्रदान हुया है पण प्राचीन पांडुलिपियां री सुरक्षा री दीठ सूं जयपुर में 'पोथीखाना', बीकानेर में 'अनूप संस्कृत पुस्तकालय' अर जोधपुर में 'पुस्तक प्रकाश' री स्थापना इण दिशा में सांतरो प्रयास हो।

जोधपुर रा महाराजा मानसिंघजी साहित्य अर कला रा पारखी ही नीं, बै खुद डिंगल काव्य-शैली रा लूंठा कवि विद्वान साहित्यकार हा। जोधपुर रै किलै में अेक पुस्तकालय री स्थापना उणां रै शासनकाल में ईज हुयी। वि. सं. 1861 (1805 ई) में स्थापित इण पुस्तकालय रो नांव 'पुस्तक प्रकाश' राखीज्यो जको आज मेहरानगढ म्यूजियम में 'महाराजा मानसिंघ पुस्तक प्रकाश (शोध-केंद्र)' रै रूप में संचालित है।

महाराजा मानसिंघ पुस्तक प्रकाश में संस्कृत रा तीन हजार प्राचीन ग्रंथां रै अलावा राजस्थानी अर हिंदी रा लगैटगै दो हजार हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध है। आं में काव्य, कोश, ज्योतिष, नीति, नाथ साहित्य, योग, वार्ता, शालिहोत्र अर संगीत विषय माथै अनेक दुर्लभ ग्रंथ है। आं में महताऊ ग्रंथ इण भांत है– राजरूपक, अवतारचरित, संगीतसार, भाषा–भूषण आदि। पुस्तक प्रकाश रा प्राचीन ग्रंथां में महाराजा जसवंतसिंघजी (प्रथम) रै लिख्योड़ो ग्रंथ 'भाषा–भूषण' नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस सूं छप चुक्यो है जदकै आनंद विलास, अनुभव प्रकाश, अपरोक्ष सिद्धांत, सिद्धांतबोध, सिद्धांतसार पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊ 'वैदांतपंचक' नाम सूं जोधपुर दरबार री आज्ञा सूं गवर्नमेंट प्रेस, जोधपुर सूं छपवायो हो। [5]

इणरै अलावा जोधपुर रै इण शोध–केंद्र में संगृहीत हजारूं बहियां जोधपुर राजघराणै अर नवकूंटी मारवाड़ रो इतियासू दस्तावेज बण्योड़ी है। आं में विवाह, दस्तूर, जनाना ड्योढी री जमा खर्च, कपड़ां रै कोठार, जवाहर खाना, टकसाळ अर कमठाणां आद बहियां प्रमुख है। पुस्तक प्रकाश में उपलब्ध प्राचीन पांडुलिपियां रो अेक कैटलॉग भी छप चुक्यो है। इणरै अलावा महाराजा मानसिंघ पुस्तक प्रकाश सूं आधुनिक राजस्थानी साहित्य री पोथ्यां रो प्रकाशन भी हुय रैयो है।

राजघराणां रा ग्रंथ भंडारां री इणी ओळ में बीकानेर रो महाराजा अनूपसिंघ संस्कृत पुस्तकालय भी महताऊ ग्रंथागार है। बीकानेर रै राजवंश में महाराजा अनूपसिंघजी (सन् 1669–98) साहित्य अर कला रा लूंठा संरक्षक हुया। यूं उणां सूं पैलां रा शासक भी समै–समै पर कवि–कोविदां अर साहित्यकारां नैं मान–सम्मान देंवता रैया। महाराजा अनूपसिंघ पुस्तकालय रै सागै 'संस्कृत' शब्द जुड़्योड़ो होवण रो मोटो कारण संस्कृत भासा में उपलब्ध ग्रंथां रो आधिक्य ई है। सन् 1880 में इण पुस्तकालय रै महताऊ ग्रंथां री सूची ब्रिटिश हुकूमत रै राज में छप चुकी ही। आ सूची पं. हरप्रसाद शास्त्री त्यार करी। इणरै पछै 1918 में इटालियन विद्वान डॉ. लुईजी पिओ टैस्सीटोरी बंगाल री अेशियाटिक सोसाइटी सूं इण पुस्तकालय रै ग्रंथां री अेक औरूं सूची छपवाई।

इण पुस्तकालय री छप्योड़ी अर अणछपी सूचियां मुजब 9521 ग्रंथ संस्कृत भासा में, 554 ग्रंथ हिंदी में अर 359 ग्रंथ राजस्थानी भासा में है। इणरै अलावा 830 ग्रंथ जैन शास्त्र रा है। इण भांत कुल ग्रंथां री संख्या 11,264 है, जिण मांय सूं राजस्थानी अर हिंदी भासा रा ग्रंथां री सूची तो छपचुकी है, पण संस्कृत भासा रा ग्रंथां मांय सूं फगत 6682 ग्रंथां नैं ईज छप्योड़ी सूची में लिया जाय सक्या है। [6]

इण पुस्तकालय में राजस्थानी रा महताऊ ग्रंथां में पृथ्वीराज रासौ, छंद राव जैतसी रउ, क्रिसन रुकमणी री वेलि, गुण बावनी, अचलदास खीची री वचनिका, उदयपुर री ख्यात, मारवाड़ री ख्यात, बीकानेर रै राठौड़ां री ख्यात, दयालदास री डायरी, देसदर्पण,

बीकानेर रै राठोड़ां री ख्यात, ग्रंथराज, ढोला-मारू रा दूहा आद प्रमुख है। इणरै अलावा पट्टां, पीढियां अर वंशावलियां री विगतां ई इण पुस्तकालय में सुरक्षित है। पीढियां रै संग्रै में राजा-रजवाड़ां रै अलावा 'ओसवाळां री पीढियां' भी है। राजस्थानी रै वात-साहित्य रो इण पुस्तकालय में अनूठो संग्रै है। राजस्थानी मनीषी डॉ. मनोहर शर्मा द्वारा उजासित 'वात कुंवरसी सांखलै री', 'रामदेव तंवर री वात' अर अैड़ी ई अनेकूं वातां री प्रतियां इण पुस्तकालय में उपलब्ध है। वातां रै अलावा केई राजस्थानी काव्य-रचनावां भी संगृहीत है।

हस्तलिखित ग्रंथा री हेमाणी रै रूप में जयपुर रो पोथीखानो जगचावो है। इण पोथीखाना में किणी अेक राजा रै शासनकाल में रचित अथवा संगृहीत हस्तलिखित ग्रंथ नीं है पण राजा मानसिंघ (प्रथम) रै काल में इण पोथीखानै में महताऊ ग्रंथ संगृहीत हुया।

मोहन कवि री 'मदनमंजरी नाटिका', त्रिमल्ल भट्ट कृत 'मानसिंह- प्रतापकल्लोल', हरिनाथ भट्टकृत 'काव्यादर्श री सम्मार्जनी टीका', विट्ठल पुंडरीक रचित संगीत शास्त्रीय ग्रंथ 'रागमंजरी', अमृतराइ रो 'मानचरित रासो' अर नरोत्तम कवि विरचित 'मानचरित काव्य' अर लाखा बारहठ रो गीत संग्रै उणीज बगत इण पोथीखानै में संगृहीत होय चुक्या है।[7]

आं रै अलावा भी संस्कृत, प्राकृत, हिंदी अर राजस्थानी रा मोकळा हस्तलिखित ग्रंथ इण पोथीखानै में संगृहीत है। पृथ्वीराज रासौ री इण पोथीखानै में केई प्रतियां मिलै अर बै अलग-अलग खंडां में उपलब्ध है। पोथीखाना में खास मुहर रा 8000 ग्रंथां, 714 धर्मशास्त्रीय ग्रंथां री सूची मिलै। बस्ताबंद आं ग्रंथां नैं स्टील री आलमारियां में घणी जुगत सूं जचायोड़ा है।

(आगलै अंक में लगोलग...)

◆◆

संदर्भ-सूची

1. परंपरा (अंक 71-72), संपादकीय, डॉ. नारायणसिंह भाटी, पृष्ठ-1
2. राजस्थान रा पोथी भंडार, श्री अगरचंद नाहटा, माणक, सितंबर, 1982
3. 'जैन संस्कृति और राजस्थान' पुस्तक में डॉ. किस्तूरचंद कासलीवाल रै आलेख सूं उद्धृत।
4. जिनभद्रसूरि ज्ञान भंडार जैसलमेर, श्री सुशीलकुमार मूथा, परंपरा (अंक 71-72), पृष्ठ 18
5. महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, शोधकेंद्र जोधपुर, श्री सुखसिंह भाटी, वही, पृष्ठ 74
6. अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर, डॉ. घनश्याम देवड़ा, वही पृष्ठ 99-115
7. जयपुर का पोथीखाना, श्री गोपाल नारायण बहुरा, वही, पृष्ठ 44

मंजू किशोर 'रश्मि'

तरसबो

थारो म्हारो बंधण
समझ न आवै बावळिया
यो लेख म्हांनै नीं जोड़्या
जो तूं खुस होरयो छै
म्हनैं अपणा'र
थारी पथवारियां में यूंही
नीं मंड्या मन ना मांडणा
म्हैं करया छा पिछला जनम सूं ही
तन्ह पाबा के तांई घणा जतन
दबाया छा चाकरी में चरण भगवान का
आंख्यां सूं धोया छा पग
पीयो छो चरणामृत घणो
फेर भी तो देख मिल्यो तो सई तूं
पर दूसरां को होर
तरसतो ही रहग्यो मन रो मोर
थारा प्रेम रा बादळा अठी-उठी ही बरसग्या
फेर ईं जनम में कर रही छूं
मनवार थारा मलबा की
बेदरद कान्हा सूं
बरत, उपवास, पूजा
नहा रही छूं सावण म्हीना तांई भूखी-प्यासी

वीएचई-119, विवेकानंद नगर, कोटा (राजस्थान) मो. 8441019846

हाड जमाती ठंड में
नौरता में पाणी पी करी छै
आराधना जोगणिया माई सूं
मंदर-मंदर, तीर्थ-तीर्थ कर रही छूं
ढोक बिनती
उलटो साखियो मांड आयी मंदर कै पाछै
आगला जनम म्हनैं दे दीज्यो हाथ ऊंको
दोनूं जोड़ा सूं आय'र करांगा सीधो साखियो
अर कर देवांगा सवामणी
सात जनम तांई करूंगी चाकरी
थारी भी अर राखलै तूं मन म्हारो
संभाळ'र अतना कराया सूं भी
तो साथ जमारो सफळ हो जावै अेक बार में ही
सात जमारां साथ छै
ईं जनम में भी न मल्या तो
फेर जनम लेंगा ईं धरती पै
थनैं पाबो घणो कठिण छै
बावळिया! तूं कांई जाणै तरसबो?

भरकी

समंदर भर्‌या संसार में अेक तूं ही छै
जिन दिलड़ो दिन-उठ, आठूं पौर यार करै छै
सोबा दे न जागबा दे
सांसा के मनका पै असी कांई भरकी फेरग्यो रे
अेकर मल्या छै म्हारा दिन अर राज
भलांई खाढतो गळ्यांई छै
चतर चौकड़ियां भर भाला मन कै
बांधग्यो ओळख की काचा सूत की जेवड़ी बणा'र
साखिया मांड-मांड'र मिटा'र
रया छै बार-बार थारै कुशल-खेम का
जाणै किसी धुन में अनवरत ये हाथ।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

सरला सोनी 'मीरा कृष्णा'

पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई

पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई
पूत वार दियो जलमभोम पै
राजधरम रो इस्यो ग्यान कठै सूं ल्याई
पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई

बनवीर भूलग्यो छात्र धरम
लालच में नांव डुबोय दियो
तूं दासी होय'र देसभगती को
अैड़ो भाव कठै सूं ल्याई
पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई

सगळा सेवक आंधा होकर
अन्याव रै साम्हीं सर झुका दियो
तूं बण सिंहणी साम्हीं घिरगी
अतरो बळ-हूंस कठै सूं ल्याई
पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई

काळजा रा टुकड़ा कर'र
निज हाथ सूं बेटो गमाय दियो
वचन निभावण खातर
रघुकुळ री सीख कठै सूं ल्याई
पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई

139, रूपनगर प्रथम, पाल रोड, जोधपुर (राज.) 342008 मो. 9549433004

पूत-रगत री धार पगां जद लागी
अमर रैवण रो आसीस दियो
मातृधरम अर देसधरम रै संगम रो
पवित्र भान कठै सूं ल्याई
पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई

चंदन जोग दूध सूं अे मायड़ तूं
मेवाड़ सगळो ई सींच दियो
देस री खातर अे भगतण तूं
इतरो नेह कठै सूं ल्याई
पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई

धरती जितरो दुख झेलण नै
हिमाळो छाती पै धर दियो
आंसूड़ै रा झरणा रोकण तांई
सब्रां रा बांध कठै सूं ल्याई
पन्ना, तूं इत्ती करड़ी छाती कठै सूं ल्याई

चिड़ियां ज्यूं उड जाय

पीहरियै रा रूंखड़ा, ओळ्यूं कर झड़ जाय
कद आवैला चंचळी, उडीक सूख्यां जाय

नानाणै री राबड़ी, लागै मीठी गट्ट
दादी थारा गुलगुला, पड़िया फीका फच्च

सासरियै में पीवजी, हिवड़ै हेत लगाय
ऊंच-नीच री रीत में, म्हारी ढाल बण जाय

सहेल्यां संग सूवटां री, बंदनमाळ बणाय
चिरम्यां-चिरम्यां खेलतां, चिड़िया ज्यूं उड जाय
◆◆

 ISSN : 2320-0995

प्रहलाद सिंह झोरड़ा

पधारो मात भारती

बार-बार वंदना में धूप, दीप, आरती
पूत री पुकार सुण, पधारो मात भारती

पुष्पमाळ थाळ में मोत्यां सजा'र लायो हूं
कूं-कूं, मोळी संग मंगळीक भी चढायो हूं
दरसणां उडीक मांही आंखड़्यां निहारती!

आपरी आसीस मांगै है कवि री लेखणी
भावां सूं हियो भरीजै यूं करो मेहर घणी
सबदां रो भंडार मांगै है जुबां उचारती!

छंद रो विधान, गीत गाण भी दिराओ मां
ईं धरा पे काव्य नैं माण भी दिराओ मां
कंठ में विराजो म्हारी आतमा पुकारती!

आप ही उजास देणी, अंधकार लेवणी
दास नैं दिराओ दान, विद्या दान देवणी
बारणै खड़ी है दुनिया आज कर पसारती!

श्री करनी मंदिर रै साम्हीं, करनी कॉलोनी, नागौर (राज.) मो. 9413242122

थनैं गीतां में गाऊंला...

थनैं गीतां में गाऊंला अे म्हारै काळजियै री कोर
म्हारै काळजियै री कोर, मन मंदिर री गणगौर
थनैं गीतां में गाऊंला अे म्हारै काळजियै री कोर...

थूं जे हरखै तो दिन ऊगै, रूठै तो सांझ ढळै छै
थनैं देख देख ही गजबण, आभै रो चांद पळै छै
म्हैं हूं कळियां रो लोभीड़ो, थूं भंवरां री चितचोर
थनैं गीतां में गाऊंला अे म्हारै काळजियै री कोर...

थारो रूप निहारण रै खातर छाया अर धूप लड़ै छै
थारी अेक झलक जे निरखै तो शीशो भी चटक पड़ै छै
म्हारै नैणां में रमती रैवै थारी सूरत आठूं पौर
थनैं गीतां में गाऊंला अे म्हारै काळजियै री कोर...

थूं मनमोहण मीठी बोली बोलै तो इमरत घोळै
थारै अेक हाथ रो झालो ही टोळ्यां री टोळ्यां टोळै
थूं जोबन रे मद मतवाळी नित लागै नूंवी नकोर
थनैं गीतां में गाऊंला अे म्हारै काळजियै री कोर...

थूं जे बणठण कर चालै तो यूं लागै घूमर घालै
थारी रूप तिजोरी निजर पड़्यां मन कामदेव रो हालै
ऋषियां री तपस्या फळ जावै, नाच उठै मन मोर
थनैं गीतां में गाऊंला अे म्हारै काळजियै री कोर...

थूं सार समझ ले इण जग रो जीवण में साथ जरूरी
सौ बातां री बात अेक ईसर बिन गवर अधूरी
थूं जे हामळ भर देवै तो ले आऊं कांकण डोर
थनैं गीतां में गाऊंला अे म्हारै काळजियै री कोर...

◆◆

ISSN : 2320-0995

संतोष शेखावत बरड़वा

खागां रा गीत सुणाऊंली

बोली जाणूं रणभेरी री, ना गीत प्रीत रा गाऊं हूं
इण वीर वसुधा री रज्ज नैं, नित सादर सीस निवाऊं हूं
ऊफाण रगां रै रगत मांय, हूं लहू नहीं लज्जाऊंली
हूं सूर्यवंस री जायोड़ी, खागां रा गीत सुणाऊंली

देखूं ना सुपना साजन रा, नैणां रा डोरा लाल करूं
बलिदान मांगलै जे धरती, माटी खातर जाय मरूं
मैंदी मोळी री बातड़ल्यां, हूं मन में नहीं बिचारूंली
हूं सूर्यवंस री जायोड़ी, खागां रा गीत सुणाऊंली

उण महाराणा री वंसज हूं, जो जूझ्या हळदीघाटी में
माथा बाढ्या हा मुगलां रा, बो समरांगण री माटी में
चेतक चढियोड़ै पाथळ री, शमशीरी राग सुणाऊंली
हूं सूर्यवंस री जायोड़ी, खागां रा गीत सुणाऊंली

हाडी रो रगत रगां में है, आ धरा कहै जिणरी गाथा
जिण काट्यो माथो झटकारै, रातै चटकारै निज हाथां
हूं रंग रचणियै हाथा सूं, दूधारी कलम चलाऊंली
हूं सूर्यवंस री जायोड़ी, खागां रा गीत सुणाऊंली

गांव-बरड़वा, पोस्ट-छोटी बेरी 341551 (जिला-नागौर) राज. मो. 9166121034

बिन माथां रा धड़ लड़ जावै, अैड़ी अलबेली जामण है
जिण वीर घणेरा जाया है, आ बा ही मायड़ सागण है
हूं जलमभोम री आण तणै, निज हाथां भाळ चढाऊंली
हूं सूर्यवंस री जायोड़ी, खागां रा गीत सुणाऊंली

माथा कटग्या पण झुक्या नहीं, बा बडकां री म्हूं जायी हूं
साचोड़ी महिमा माटी री, अर वीरां री म्हूं गायी हूं
उण सूरजमल अर तेजा री, बलिदानी ख्यात सुणाऊंली
हूं सूर्यवंस री जायोड़ी, खागां रा गीत सुणाऊंली

बैर करयां है हाण मानवी

मत कर खींचाताण मानवी, अब तो तज अभिमान मानवी
माथा ऊपर काळ फिरै रे, बणियो क्यूं अणजाण मानवी

दया धरम सूं प्रीत पाळ ले, बैर करयां है हाण मानवी
ऊंच-नीच रो भेद त्याग दै, सबको इक समसाण मानवी

दुख रो संगी कोय नहीं है, अब तो करो पिछाण मानवी
दुख में सगळा पाछा रैसी, सुख में है अगवाण मानवी

कड़वो मत ना बोल बोल रे, बस में राख जबाण मानवी
घाव लगेड़ो भर जावैलो, खोटो रसना बाण मानवी

सूकरमां सूं साख बांधलै, जब तक तन में प्राण मानवी
पड़्यो-पड़्यो पिछतावैलो, जद हट जासी हांण मानवी

मन मांहि 'संतोष' धारलै, बधसी नित रो माण मानवी
मत कर खींचाताण मानवी, अब तो तज अभिमान मानवी

◆◆

डॉ. शंकरलाल स्वामी

अेक

उतर्‍यो उतर्‍यो चेहरो लागै
घाव काळजै गहरो लागै

कैवां किणनैं मन री बातां
सुणणै वाळो बहरो लागै

किणी राज रै दफ्तर जावो
मांगणियां रो डेरो लागै

कियां उजड़गी गांव गुवाड़ी
ओ कुण रो पगफेरो लागै

आंख्यां सूं आंख्यां मिलतां ई
क्यूं ओ मिनख भलेरो लागै

आळस छोड जाग रे मनवा
होग्यो अबै सवेरो लागै

बठै न्याय री आसा नीं है
जठै साच पर पहरो लागै

आदर रा हकदार बै, जिणनै
सेवा काम सुनहरो लागै

लालीबाई बगेची सूं आगै, मुरलीधर व्यास नगर रोड, बीकानेर 334004 (राज.) मो. 7976345898

दो

इब भेळा परिवार कठै है
दो भायां में प्यार कठै है

कर मनवार जीमावण वाळी
मुसकाती घर नार कठै है

पट खोल्यां सत्कार करणिया
डोढ्यां, पोळां, द्वार कठै है

बूढा माईत सेवा सारू
बेटा-बहू त्यार कठै है

कंगण नीं खणकै हाथां में
पग पायल झणकार कठै है

सूना कान अडोळो माथो
कनक गळै में हार कठै है

भेख सिंघ रो हुयां हुवै के
कंठा बिचै दहाड़ कठै है

बातां तो है और मोकळी
कैवण में पण सार कठै है

चार

मिनख मिनख रो बैरी क्यूं है
घिरणा री जड़ गैरी क्यूं है

क्यूं समझै हेटा दूजां नैं
अकल मिनख री जैरी क्यूं है

नीं लायो नीं लेजावै कीं
फेरूं तेरी मेरी क्यूं है

लालच लोभ ईरखा धोखो
बुद्धि धन री चेरी क्यूं है

दीखै पक्या आम सा मीठा
बातां खाटी कैरी क्यूं है

स्वारथरगत रमै रग-रग क्यूं
घर-घर हेराफेरी क्यूं है

इण ढंगढाळै पण आ दुनिया
तो ई आस सुनहरी क्यूं है

तीन

प्रीत रो दुसमण जमनो है तो है
आपां नैं रिस्तो निभाणो है तो है

घूंघटै री ओट रा दिन नीं रह्या
अबै ओ पड़दो हटाणो है तो है

रात नै भंवरो कमल में कैद हो
प्रीत भी जे कैदखानो है तो है

दुनिया दौलत तिजोर्‌यां में भर री
प्रीत पण म्हारो खजानो है तो है

राज हिवड़ै में रैवै नीं घणा दिन
अेक दिन सै नै बताणो है तो है

सूर, तुलसी और मीरां री तर्‌यां
प्रीत में जे डूब जाणो है तो है

ISSN : 2320-0995

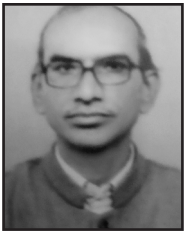

रामदयाल मेहरा

अेक

बड़बोलां रो जोर भायला
बस बातां रो शोर भायला

मंचा पे पंचां रो कब्जो
नूंवी ढूंढलै ठोर भायला

मुखिया कांई करै रुखाळी
जद घरका ही चोर भायला

साख जमाबा खातर करता
दौरा ऊपर दोर भायला

हुई किणरै काजळ सूं काळी
बुसट नूंई नकोर भायला

भायलां री भड़ सूं बोलै
रामदयाल सिरमौर भायला

दो

निज भोगी पर बीती कह तूं
पण बातां नीति री कह तूं

जांच परख साची या झूठी
बात नहीं उडती सी कह तूं

राजस्थान साहित्य अकादमी, हिरणी मगरी, सेक्टर नं. 4, उदयपुर (राज.) मो. 9460883222

नीति सम्मत निरणै करजै
मत तूं हांजी हांजी कह तूं

चोखी लागै सब रै हित री
ईंकी अर ऊंकी भी कह तूं

हर बार रूखी-सूखी सी
कदै तो भीगी-भीगी कह तूं

रामदयाल जीवण भर झूठी
अब तो साची-साची कह तूं

तीन

वांका ही मजबूत घरबार छै
ज्यांकी जमीं अर गाढी गार छै

ला लागै बोली अर बरताव में
सबको पण देस हित बिचार छै

कई रंगां रा फूल अेक डाळ में
गांठ मजबूत गूंथ्या हार छै

धन जोबन पर गरभै मती तूं
काया तक तो या थारी उधार छै

रामदयाल ऊंडो देख घबरावै मती
आगै चाल हाल तो मझधार छै

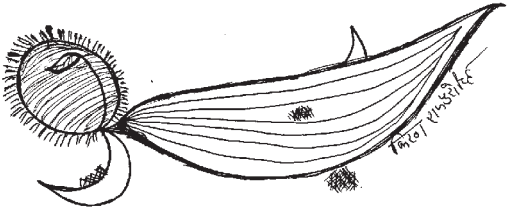

ISSN : 2320-0995

शिवचरण सेन 'शिवा'

म्हारा गांव में

उन्हाळा का बादळ छाया जद सूं म्हारा गांव में।
टांकी शैळी छाकळ सूखा रूंख सूं म्हारा गांव में।

न्हार-बैंगड़्या बैठ्या कांकड़ पै घात लगायां,
छिपग्या सांकळ चढा'र मिनख म्हारा गांव में।

बीरान होरी छै नागफणी का डर सूं झूंपड़्यां,
पण होरया मांदळ का जापा नत म्हारा गांव में।

कागला का भै सूं छूट्यो फंद बच्यारी मछल्यां को,
पण कर रैया नांगळ बगला नत म्हारा गांव में।

स्याण होय'र जीवा लागी जद सूं उनमादण,
मचरी छै आकळ-बाकळ नित म्हारा गांव में।

कीड़ा मकोड़ा की नाई होरया छै पैदा लोगदेणी,
झगड़रया छै चातळ की नांई म्हारा गांव में।

मन कै भीतर

छाबा लाग्या बादळ काळा मन कै भीतर।
सबका गेला नाळा-नाळा मन कै भीतर।

खा कचकची बाथ भरी असी जोर सूं थांनै,
ज्यूं बखरी मोत्यां की माळा मन कै भीतर।

'सौरम घर', 68-तिलक नगर, झालावाड़ (राज.) 326001 मो. 8003134522

आंसू की लारां छलकी यूं ओळ्यूं थांकी,
टूट्या जद भावां का ताळा मन कै भीतर।

धरम अरथ काम लोभ का खूण्यां छै देह में,
सगळा बण्या माकड़ जाळा मन कै भीतर।

खूब कटारियां घसी थनैं तिरछी नजर सूं,
रोक न पाई यानै ढालां मन कै भीतर।

घणी गलगल्यां करी थांनै म्हांका तन पै,
कर पाई न म्हांका चाळा मन कै भीतर।

तूं न झांकै म्हारा आड़ी तो कांई हुयो,
घणा छै म्हई च्हाबा वाळा मन कै भीतर।

भाईला

म्हारी अेक बात जाण भाईला।
सोज्यै मत खूंटी ताण भाईला।

कबीर मीरां नैं भज्यां सूं पैलां,
भजलै अपणो प्राण भाईला।

फरज्यां सांमै मूंछ्यां खैंच बेटा,
न राखै बापू की काण भाईला।

देख भर्‌यो घड़ो जनसंख्या को,
बसग्या घणा मसाण भाईला।

पाल्येगो अेक दिन तूं मंजिल,
भर आसा को उफाण भाईला।

नत करमां की करणी देख,
पढलै गीता-कुराण भाईला।

बना सोच्यां मत दीज्यै बेटी,
दीजै पाणी ज्यूं छाण भाईला।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

डॉ. शिवराज भारतीय

बिरखा आई आंगणै

बादळ उमट्या मिलणबी, धरती भरल्यां बांथ।
पवन झकोरा झूमता, मिलबा आया साथ।।

झिरमिर-झिरमिर छांटड़ी, पायल री झणकार।
बाजै छम-छम आंगणै, मरवण री मनवार।।

बिरखा आई आंगणै, ज्यूं सूरज परभात।
नाच्या मन रा मोरिया, कर्‌यो सुरंगो गात।।

सावण मनभावण बण्यो, ठंडी चालै पून।
झिरमिर छांट सुहावणी, आभै भांग्यो मून।।

जबरी घणी उडीक सूं, बरस्यो सावण मेह।
राजी होया रामजी, भीजी धरती देह।।

बेलां पसरी बाग में, फूलां चढगी देह।
मन में हरखी मोकळी, सावण बरस्यो मेह।।

बिरखा बरसी मोकळी, बादळ तोड़्यो मून।
हींडो हींडां चाव सूं, चाली ठंडी पून।।

तिरिया-मिरिया कर दियो, सावण झड़ी फुवार।
ऊंचो आयो उफणतो, गोडै सुदो गुंवार।।

काचर लोइया टींडसी, गुड़कै घेर-घुमेर।
जाणै गिंडी खेलर्‌यो, सावण च्यारूंमेर।।

माळियां रो बास, पो. नोहर, जिला-हनुमानगढ़ (राज.) मो. 9414875281

डरपै कांपै सावणी

दळ बादळ सी दमदमै, टिड्डुयां च्यारूंमेर।
सगळा सांभो मोरचा, मती लगावो देर।।

बैठैली जे खेत में, करसी सगळो नास।
बैरण चटकै चट करै, कात्यो-पिन्यो कपास।।

ढोल नगाड़ा पींपला, गाजा-बाजा साज।
बाजैला ढम-ढम जदी, टिड्डुयां जासी भाज।।

टिड्डुयां खायो खेत नै, खाया हरियल पान।
बूंटा रा बंट काढिया, मगसो पड़ग्यो धान।।

हरियल पत्ता भख लिया, करग्या चालणी बेज।
मिन्टां मांय मचाय दी, घमासाण नीं जेज।।

काळ करोना बण रैयो, मिनखां माथै आज।
फसलां माथै काळ बण, गेरी टिड्डुयां गाज।।

टिड्डी आयी खेत में, उडरी च्यारूंमेर।
डरपै-कांपै सावणी, बूंटा घेर-घुमेर।।

आगै टिड्डुयां दौड़ री, लारै-लारै लोग।
जे नीं निकळी खेत सूं, फसलां बणसी भोग।।

टिड्डुयां छाई खेत में, डारां माथै डार।
साव सफाचट सावणी, किरसो जासी हार।।

लेल्यो पींपा थाळियां, हाको-रोळो मांड।
टिड्डुयां काढां खेत सूं, नीतर करसी कांड।।

जिण दिस बाजै बायरो, उण दिस टिड्डुयां जोर।
लूटेरी लाटो लुटै, दिन देखै ना भोर।।

टिड्डुयां थे निकळो टुरो, काळै कोसां दूर।
काळ धरा गेरो मती, फसल घणी भरपूर।।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

बाबूलाल शर्मा 'बौहरा'

जीवण जोबन अंत

पीव कनागत भी गया, दौरा लागै काग।
यादां थारी आवती, हिवड़ै सिळगै आग।।

थांकी सौगन सायबा, याद करूं वै बात।
तारा गिणती काटती, विरहा सारी रात।।

दिन भर काग उडावतां, सुगन मनाऊं कंत।
चढूं डागळै देख री, आतां-जातां पंत।।

प्रेम फांस हिवड़ै लगी, तपै सुनहली देह।
देख बादळा मेह रा, तन मन चावै नेह।।

उडता पंछी आसमां, करती देख विचार।
पांख उगा भगवान तूं, उडूं समंदर पार।।

मन में भावै सायबा, धंधै लगै न जीव।
हिचकी आती जद रुकै, सोचूं आतम पीव।।

नवरातां में सब जणी, पूजै देवी देव।
रही अेकली सायबा, थां बिन कयां कलेव।।

होय देवरां आरती, मन में उठरी हूक।
अब तो आजा सायबा, नवरातां मत चूक।।

घर आंगण सूनो लगै, खाबा आवै नीम।
बिन थांकै काया बळै, आजा बलम हकीम।।

पोस्ट ऑफिस रै साम्हीं, सिकंदरा, जिला-दौसा (राज.) 303326 मो. 9782924479

नवरातां नीं आय तो, जीवूं कोनी कंत।
तड़प तड़प कर मैं करूं, जीवण जोबन अंत।।

शरमा बाबूलाल इब, समझ विरह री पीर।
सारस ज्यूं करळाय री, आन बंधा मन धीर।।

बालपणै ब्याह

बालपणै शादी करी, भटक गया मन मीत।
पढबो-लिखबो छूटगो, आय लपेटै रीत।।

बेगा होगा टाबरा, सेहत गई पताळ।
आय जवानी पैल ही, हुयो जीव जंजाळ।।

मात पिता न्यारा हुया, कही कमाओ खाय।
भूत भविस की सोचतां, वर्तमान चलि जाय।।

दोरो होगो जीवणो, भूल गया सब गीत।
बालपणै शादी करी, भटक गया मन मीत।।

भैण भुवा का लाड सब, गयै कुआ कै पींद।
चार दिनां को चानणो, बणै जिंदाड़ै बींद।।

म्हे डूब्या सो भोत छै, मान मंजूरी खाय।
अब सरकारी रोक वै, रोक समाज लगाय।।

रीत रीत में लुट गई, होती जे मन प्रीत।
बालपणै शादी हुई, भटक गया मन मीत।।

बाल ब्याह अभिसाप छै, करो समाजी गाड़।
समय पाय शादी करो, बाळपणै नहिं लाड़।।

सतफेरा, सातूं वचन, करल्यो सत संकल्प।
बाल ब्याह नैं टाळणो, करल्यो काया कल्प।।

रीत पुराणी भूलियो, देख जमाना गीत।
बालपणै शादी हुई, भटक गया मन मीत।।

◆◆

डॉ. शिवदान सिंह जोलावास

चारूं कानी चेती आग

सियाळै में हाड तोड़, जद करसै राग सुणाई ही।
पावठ रा छांटा पड़तां ई, व्है तंबू ताण जमायी ही।।
जद रगत उछाळा मार रह्यो, चारूं कानी चेती आग।
इण डांगर, लठ, गोफण नैं राख, हळवाणी रै देदी धार।।

आथमणै जद सूरज पूगै, चांद चढै तद गिगनार।
पहरो पूरो करतां ही, उतरै आभै रै विण पार।।
हेर रह्यो है कैलू हरपल, सावण पैली हो तैयार।
डांडै री भी ताण कसी है, वळी बरोबर हेर हवार।।

मां बेबे अर काकी साथै, सेवा रो सनेसो लायो है।
सरदी बिरखा ताप मांयनै, व्है चूल्है साथ तपायो है।।
छांट रह्यो है धूंधळका नैं, इंकलाब नाळ भगायो है।
चेत गयो है करसो अबकै, दिल्ली घेरो लगायो है।।

तूं भी साचो वो भी साचो, झूठ कठै कुण मांडै है।
लोकतंतर रो चौथो थांबो, कुबेर खजानो झांकै है।।
अन्नदाता जद इण जगती रो, आपूं खिमता नापै है।
आभै आयो इंदरधनख सुण, बदळी घड़घड़ गाजै है।।

251, सेक्टर-11, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) 313001 मो. 9414737972

आखी जगती जीत गया

आप ही पगां जद ऊभा व्हिया, बांदरा सूं मिनख बण्या।
दो हाथां री मैणत सूं ही, आखी जगती जीत गया।

दो भाटां सूं चिळक बणी, मंगरा फोड़ बणी गुफा।
भाटा रा औजार बण्या, अर लोहा रा हथियार बण्या।।
दो हाथां री मैणत सूं ई, चूल्है ताप लगायो है।
लहू पसेवो करनै ही तो, खेतां नैं निपजायो है।।

हळ हांकता गीत बण्या, खेत जोतता राग सुण्या।
आप मंजीरा नाची मीरां, पीथी री बरु तणी।।
देख मजूरां खाली है इब, कारखानां ई लील गया।
दो हाथ अबै तो खाली है, क्यूंकै इणनैं काम नहीं।।

म्हूं ई धान पकायो है तो, सोवूं क्यूं भूखै पेट म्हैं।
गारा सूं ही रमतां रमता, म्हैल-माळिया थारा चिणाया।
संसद रो हर थांबो ऊंचायो, म्हारी है आवाज थूं।
दो तागै सूं थान बणाया, फटेहाल फुटपाथ क्यूं?

सड़कां रो है जाळ बिछायो, चीलगाडी नैं आभै उडायो।
चप्पू चप्पू नाव चलाई, रेलगाड़ी सरपट दौड़ाई।।
थाळी, मांदळ म्हूं है बजाई, थारी हामळ जाणी भलाई।
दो हाथां सूं राग बणायो, फेरूं भी अणजाण क्यूं?

म्हारा सुपना इब राचूंला, म्हूं म्हारो गीत सुणावूंला।
हूं अथक लडूंला अधियारै सूं, इंकलाब भी गावूंला।।
आभै नैं मुट्ठी में बांधूं, धरती उजाळी लावूंला।
दो हाथां री ताकत सूं ही, पार हिमाळै जावूंला।।

◆◆

बंशीलाल सोलंकी पल्ली

वै रूड़ी रीतां कठै

कठै धोतिया खादी रा, साफा तमाकू भांत कठै ?
कठै अंगरखी मारवाड़ री, चुड़लो हाथी दांत कठै ?

कठै घाघरा टुकड़ी रा, ओढण लोवड़ी आज कठै ?
कठै धाबळा ऊन रा, पैरण पगरखी आज कठै ?

बिरखा होयां खेत जावता, हळियो लियां हाळी कठै ?
ठाकर धकै पुरसण वाळी, वा सोनै री थाळी कठै ?

नाडी सूं पाणी भरती, वै पणिहार्‌यां आज कठै ?
ओरण मांय गायां चरती, वो गोडां तांई घास कठै ?

कुरजां, मूमल, घूमर सरीसा, वै मुरधर रा गीत कठै ?
साचो भेद खोलणियां, वां न्यावड़ियां सी नीत कठै ?

अमर प्रीत निभावण वाळा, वां मिनखां सा मीत कठै ?
पैली तीज पीवर में करती, वां बेट्यां री रीत कठै ?

पति जीमियां पछै जीमती, वै पतिवरता नार कठै ?
काळ पड़ियां घबराता कोनी, वै जीणै रा सार कठै ?

सुख-दुख री खबरां लावता, वै डाकियै रा तार कठै ?
बात बंतळ छेड़्यां पछै, वां सबदां री तकरार कठै ?

गांव-पल्ली द्वितीय, तहसील-लोहावट, जिला-जोधपुर (राज.) 342302 मो. 9672674464

माथै ऊपर बळीतो लावती, छाणा चुगती छोकरियां कठै ?
ढाणी–ढाणी धीणा होता, दही बिलोती डोकरियां कठै ?

बापूजी सूं डरती रहती, वै मारवाड़ री बायां कठै ?
नरसां सूं सुघड़ होवती, वै गांवां री दायां कठै ?

जंवाई देखनै राजी हुती, वै सासू मां आज कठै ?
मूंडै उघाड़ी रहती कोनी, वां बीनणियां री लाज कठै ?

तीज–तिंवारां हींडा हींडती, वां सखियां री जोड़ी कठै ?
पाबू नैं ले असमानां उडगी, वा केसर जैड़ी घोड़ी कठै ?

बरातियां नैं ताना देती, वै गीतां री गाळ कठै ?
बिरखा होयां टाबर गुड़कता, वा धोरां री ढाळ कठै ?

भेड़–बकर्‌यां, ऊंट–गाय नै, चरावणियां गवाळ कठै ?
ऊंचा चढनै निगै देंवता, वा नाडी री पाळ कठै ?

बारह महीनां बणाता, मूंग मोठ री दाळ कठै ?
काचर फळियां लावण सारू, वां कुड़तां री चाळ कठै ?

टीकी टमका चैपण वाळा, लुगायां रा वै राळ कठै ?
रोटी घास री खाणी पड़ती, छप्पनै जैड़ा काळ कठै ?

सास–ससुर रो आदर करती, वै बीनणियां आज कठै ?
पतियां सागै सती होवती, वै पदमणियां नार कठै ?

पसुवां सागै हेत राखता, वै ऊंट–बळद रा मौरा कठै ?
आंधियां सूं ठौड़ बदळता, वै मुरधर वाळा धोरा कठै ?

कैर–सांगरी काचर–फळियां, भटकिणयां जैड़ा साग कठै ?
चंग रै साथै होळी रमता, फागण जैड़ी राग कठै ?

माटी सूं चिण्योड़ी होवती, गार नीप्योड़ी भींतां कठै ?
मुरधर सूं सोलंकी पूछै, थारी वै रूड़ी रीतां कठै ?

◆◆

मानसिंह शेखावत 'मऊ'

दूहासार

खारी भर खारी कही, तूं क्यूं खारी मोय।
खारी खारी फेंक दै, खारी खा सुख होय।।

खारी = मोटी छाबड़ी, चुभती बात, खाण री क्रिया, भूंडी सीख

भावार्थ : कवि आपरी घरआळी नैं केवै कै तूं म्हनैं खारी भर'र, मतलब भोत ज्यादा, इत्ती खारी बातां कैय क्यूं खा रैयी है। इण माथै घरआळी बोली कै थे इण खारी बातां मांय सूं बेकाम री बातां पै ध्यान मत दिरावो अर सीख सारू कैयीजी बातां नैं मानल्यो, जिणसूं थांनै सुख मिलै अर थांरो आगोतर सुधरै।

आडो पड़ आडो हुवै, आडो तोड़ै जाय।
आडो आंख्यां रो भलो, भाई आडो आय।।

आडो = आडो (तिरछो), खिलाफ, किंवाड़ रो दरवाजो, पड़दो, काम आवण वाळो

भावार्थ : नुकसाण पहुंचाबा वाळो कियां ई कर'र मारग में कांटा बिछाबा री कोसिस करै। कदै-कदै तो बो उन्नति रा मारग में आडो ई पड़ जावै अर आपणा सगळा सावचेती रा इंतजामां पै पाणी ई फेर नांखै। लाज-सरम रो पड़दो तो आंख्यां रो ईज होवै अर अड़ी-भड़ी में आखर भाई-बंधु ईज तो आडा आवै, काम आवै।

मु.पो. मऊ, तहसील-श्रीमाधोपुर (सीकर) राजस्थान-332715 मो. 9829164164

लाल चूनड़ी ओढकै, ले गोदी में लाल।
लाल अमोलक ल्हादगी, हूगी मालामाल।।

लाल = रातो रंग, टाबर, रतन

भावार्थ : सुहाग री प्रतीक रातै रंग री चूनड़ी ओढकै अर गोदी में आपरै पैलोटी रा टाबर नैं लेय'र बा मन ई मन रै मांय बडी राजी होय रैयी है अर हुवै भी क्यूं नीं। बीं नैं आ अेक अमोलक 'लाल' (रतन) जो मिलगी है। अर बा अब मालदार होयगी है। बीं नैं अब और कीं भी पाबा री इच्छा नीं है।

अंतर अंतर आंतरो, अंतर तेल फुलेल।
अंतर मेट्यो नीं मिटै, अंतर विधना खेल।।

अंतर = भेद, फरक, इत्र, भीतर

भावार्थ : अंतर-अंतर सबद में भी घणो भेद है। अंतर फूलां रा सुगंधित तेल नैं भी कैवै तो अंतर मांयलै मन री स्थिति भी हुवै है। अंतरमन अर्थात आतमा अमर है, ईं नैं मेटणो सोरो नीं है अर हरेक आदमी विधाता री अमोलक कृति है, ईं री तुलना दूजै मिनख सूं करणी भी असंभव है, ओ सगळो बिधाता रो अचरज भर्‌यो खेल है। आदमी-आदमी अर पाणी-पाणी री बूंद में भी फरक है।

तीर चला मत तीर सूं, बैठ तीर के पास।
तूफां में तम्बू उडै, राख तीर पै आस।।

तीर = बाण, किनारो, जहाज रो तिरपाल कै मस्तूल

भावार्थ : नदी रै किनारै पै बैठ'र तीर मत चला अर जद तूफान में नाव रो तम्बू उडण लाग जावै तो अधीर मत हो, तूं बीं रै तिरपाल पै भरोसो राख, रक्षा करण वाळो रामजी थारै सागै है।

◆◆

राजकुमार जैन राजन

झूठ रो जाळ

नदी रै किनारै चंपक बन मांय घणा सारा जिनावर अर पंछी आपसरी मांय मिल'र रैवता। सुख-दुख मांय बै अेक-दूजै रै काम आवता। पण काळू नाम रो अेक कागलो घणो दुष्ट अर चालाक हो। बो सगळा जिनावरां रो लल्लो-चप्पो कर'र आपरो काम निकाळ लेंवतो। उण मांय सै सूं गंदी आदत तो आ ही कै बो पग-पग माथै झूठ बोलतो।

हरियल तोतो, लंबू जिराफ अर जंगळ रा सगळा जिनावरां काळू कागलै नैं समझायो कै झूठै रो समाज मांय मान-सनमान नीं होवै। इण कारण तूं आपरी आदत नैं बदळ लै। पण काळू कागलै माथै आं री बातां रो कीं असर नीं होवतो।

अेक बार जंगळ मांय साक्षरता अभियान सरू होयो। जंगळ रा सगळा जीव-जिनावरां बढ-चढ'र भाग लियो। लंबू जिराफ, चिम्पू खरगोस, मोटू भालू अर फुदकु बांदर जंगळ मांय घूम-घूम'र अणपढ जिनावरां नैं पढाई री महत्ता बताई अर बांनै घणी रुचि सूं पढाया।

आखै जंगळ अेक में अेक काळू कागलो ई बच्यो, जको पढणो-लिखणो कीं नीं सीख्यो। जंगळ रै जिनावरां री मैणत रो फळ ओ मिल्यो कै जंगळ रै राजा शेरपाल पूरै चंपक बन मांय 'संपूरण साक्षर जंगळ' बणावा रो ढिंढोरो पिटवा दियो।

अेक दिन हरियल तोतो काळू सूं बोल्यो, ''भाया, पढणो-लिखणो सीख लै, थारै काम आसी।'' पण काळू रो मन पढाई कानी नईं हो, इण कारण बो चुप ई रैयो।

पढाई री बातां सुणतो-सुणतो बो आखतो होयग्यो। पछै उण प्रण करयो कै इण जंगळ मांय नीं रैवणो अर बो उड'र दूजै जंगळ मांय चल्यो गयो। उडतो-उडतो बो 'श्रीबन' मांय जाय पूग्यो अर बठै अेक रूंख री डाळी माथै बैठग्यो। बीं रूंख माथै मोनू कबूतर, गुलगुल गिलैरी अर फिसी चिड़कली बैठी ही। काळू नैं देख'र मोनू कबूतर बोल्यो, ''तूं कठै सूं आयो है रे भाया?''

चित्रा प्रकाशन, आकोला-312205 (चित्तौड़गढ़) राजस्थान मो. 9828219919

''म्हैं चंपक बन सूं आयो हूं।'' काळू बोल्यो, ''म्हारै जंगळ रा सगळा जणा पढणो-लिखणो सीखग्या है। म्हैं बां सगळां नैं पढा'र अबै नचींतो होयग्यो हूं।'' आपरी आदत रै मुजब काळू फेर झूठ बोल्यो।

आ सुण'र दरखत माथै बैठ्या सगळा पंछी भोत राजी व्हिया। बै काळू कागलै नैं राजा सेरसिंघ कनै लेयग्या अर बांनै चंपक बन नैं संपूरण साक्षर करणै री सगळी बात बतायी। सेरसिंघ काळू कागलै नैं पूछ्यो, ''तूं श्रीबन रा सगळा जिनावरां नैं भी पढणो-लिखणो सिखा सकै कांई ?''

काळू कांव-कांव करतो बोल्यो, ''हां-हां, क्यूं नीं।''

''थारै रैवण अर रोटी-पाणी रो बंदोबस्त राजकोस सूं कर दियो जासी।'' राजा सेरसिंघ बोल्यो।

''ठीक है महाराज। जिस्यो आपरो हुकम।''

काळू कागलै नैं आवतो-जावतो तो कीं हो नीं। इण कारण पढाणै रै काम सूं टाळ-मटोळ करतो। पण बीं री पोल चटकै ई खुलगी। काळू री सिकायत राजा कनै पूगतां ई बीं नैं दरबार मांय हाजर होवण रो हुकम मिलग्यो। सुणवाई होयी। काळू नैं तो कीं आवतो ईज कोनी हो। राजा सेरसिंघ काळू नैं झूठ बोलण रै अपराध में मौत री सजा सुणाई।

मौत रा नाम सुणतां ई काळू नैं कंपकंपी छूटगी। होस उडग्या। राजा सेरसिंघ रो हुकम मिलतां ई भालू मंत्री काळू कागलै री पांख्यां पकड़णै लाग्यो तो काळू सब नैं चकमो देंवतो फुर्र देणी-सी उडग्यो। सगळा जिनावर देखता ई रैयग्या।

उडतो-उडतो काळू पाछो आपरै चंपक बन मांय आयग्यो। बीं नैं देख'र जंगळ रा सब जिनावर राजी होयग्या। काळू हांफतो-हांफतो बोल्यो, ''सगळा भायलां, थे म्हनैं झूठ नीं बोलण री शिक्षा देंवता हा, पण म्हैं थांरी सीख नीं मानी अर रोजीना झूठ बोलतो रैवतो। पण आज म्हैं आज झूठ रै जाळ में इस्यो फंस्यो कै भोत ई मुस्कल सूं आपरी ज्यान बचा'र आयो हूं। आ कैय'र काळू श्रीबन री सगळी बातां साफ-साफ बता दी। बात पूरी होवण रै पछै सगळा जिनावरां देख्यो कै काळू री आंख्यां मांय साच री चमक ही।

''काका, म्हैं आज सूं थांरै कनै पढण नै आस्यूं।'' काळू कागलै, लंबू जिराफ नै कैयो तो सगळा जिनावर काळू कागलै नैं आप-आपरै कांधै बिठा'र नाचण लागग्या।

◆◆

राजेश अरोड़ा

पगां मांय पांख

सुषेण भणाई मांय हुंसियार हुवण रै साथै-साथै अेक लूंठो धावक भी हो। उणरी स्कूल, तैसील अर जिला स्तर री केई होडां ई जीत्योड़ी ही। बो आपरो कैरियर भी इण खेल मांय ई बणावणो चावै हो। देस खातर दौड़णो बीं रो सुपनो हो।

आज सुषेण स्कूल गयो तो प्रिंसीपल साब कीं नैं आपरै ऑफिस मांय बुलाय'र उण सूं कैयो, ''बेटा, प्रदेस-स्तर री स्कूलां री धावक होड परसूं सूं प्रदेस री राजधानी मांय तेवड़ीजी है। इण होड मांय आपणै जिलै कानी सूं थनैं भाग लेवणो है। आज जिला शिक्षा अधिकारी रा आदेस आया है।''

आ सुण'र सुषेण री खुसी रो कोई ठिकाणो नीं रैयो। उण प्रिंसीपल साब रा पग चुचकार्‌या अर बांरो आसीरवाद लेय'र ऑफिस सूं बारै आयग्यो।

अेकाअेक बीं रै ध्यान मांय आयो कै होड खातर रियाज रो तो अबै समै ई कोनी रैयो। अबै कांई होसी? अैड़ी थिति मांय जे म्हैं होड हारग्यो तो जिलै रो नांव तो डूबसी ई, म्हारै कैरियर रो कांई बणसी?

सुषेण गतागम मांय पड़्यो सोचतो-सोचतो पूठो प्रिंसीपल साब कनै आयो अर बांनै आपरी समस्या बतायी। प्रिंसीपल साब कीं छिण मून रैया। फेरूं बै सुषेण नैं साथै लेय'र ऑफिस सूं बारै आयग्या अर आभै कानी देखता थकां उण सूं बोल्या, ''बेटा, आभै मांय उडता थकां कागलां नैं देखो। कांई थूं जाणै है, आं कागलां रै पांख्यां मांय इत्तो सत कठै सूं आवै? अै आकास री ऊंचाइयां नाप लेवै।''

सुषेण बोल्यो, ''सर, नीं जाणूं।''

तद प्रिंसीपल साब बीं नैं समझायो, ''देख बेटा, आकास री बडाळता अर गंभीरता नैं कागला आपरै हिरदै मांय थापित कर'र निडरता सूं उडै। उडता ई रैवै। बांनै ओ

भारतीय डाक विभाग, गजसिंहपुर-335024 (जिला-श्रीगंगानगर) राज. मो. 9462822049

बिरमांड, आ पिरथी, अै घटणावां अर विचित्रतावां हळकी लागै। क्यूंकै उण बगत बांरै हिरदै मांय साहस बैठ्यो हुवै अर बै फगत बीं नैं आपरै सागै राखै।''

आ कैय'र प्रिंसीपल साब बूझ्यो, ''बेटा, कीं समझ्यो?''

''जी सर। समझग्यो।'' सुषेण उल्थो दीन्हो।

''स्याबास बेटा।'' प्रिंसीपल साब कैयो।

सुषेण होड मांय भाग लेवणै राजधानी पूग्यो। तय समै होड सरू हुयी।

सगळा धावक आप-आपरी ठौड़ माथै पोजिसन लेय'र त्यार होयग्यो। गोळी रो धमाको सुणतां ई सुषेण हवा रै फटकारै भाज्यो। उण रा पग धरती माथै ई नीं टिकै हा। इयां लागै हो जाणै बीं रै पगां मांय पांख लाग्योड़ा है अर बो हवा मांय उडतो जा रैयो है। इत्तै मांय ई दो बीजा धावक सुषेण नैं टक्कर देवण लाग्या। छेकड़ सुषेण ई नंबर वन आयो। दूजी अर तीजी ठौड़ किणी बीजै स्कूलां रा धावक आया।

आयोजकां अर विजेतावां नैं स्वर्ण, रजत अर कांस्य मेडल पैराय'र बांनै सनमानित करया। सुषेण री इत्ती बडी सफळता माथै सगळा हैरान हा। जद बो स्कूल आयो तो प्रार्थना रै पछै प्रिंसीपल साब उणनैं सनमानित करता थकां बोल्या, ''हेताळू भणेसरयां! थे सगळा ओ सोचता होवोला कै सुषेण बिना किणी रियाज अर कोच रै आखै प्रदेस मांय अव्वल कियां आयग्यो? तो सुणो! इण पीछै भी अेक फारमूलो है। सुषेण बो ई फारमूलो अंगेज्यो। बो फारमूलो म्हैं थां सगळां नैं ई बताय रैयो हूं।''

कैय'र प्रिंसीपल साब आगै बोल्या, ''बो फारमूलो है—निडरता रो भाव। क्यूंकै निडरता मन अर बुद्धि नैं बळ देवै, जिणसूं साहस पैदा हुवै अर साहस अेक अैड़ो हथियार है जिण सूं मिनख आपरै जीवण री सै सूं बडी दुरबळता नैं सै सूं बडी सगती मांय बदळ सकै।''

सुण'र सगळा भणेसरयां ताळ्यां बजा'र सुषेण रो अभिनंदन करयो। सुषेण रो उत्साह दूणो होयग्यो। उण आपरो सुपनो साकार करण रो द्रिढ निस्चै कर लियो हो।

◆◆

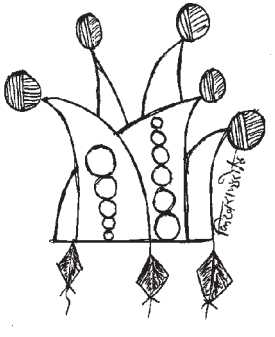

स. भूपेंद्र सिंह

ब्याधि-उच्छब : कोरोनाकाल रो व्यंग्य उपन्यास

'ब्याधि-उच्छब' डॉ. कृष्णकुमार आशु रो लिख्योड़ो अेक व्यंग्य उपन्यास है। डॉ. मंगत बादळ इण उपन्यास नैं राजस्थानी भासा रो पैलो व्यंग्य उपन्यास मानै। इण उपन्यास मांय कोरोनाकाल में गांव जैड़ै अेक स्हैर री त्रासदी रो मूंडै बोलतो चितराम उकेरीज्यो है। कैवण नै तो आ फगत अेक स्हैर री दास्तान है, पण असल मांय आ हर स्हैर, हर कस्बै अर हर गांव री कहाणी है। कोरोनाकाल मांय लॉकडाउन लाग्यो। मिनखी जिंदगाणी रो चक्को अेक दम थमग्यो। कारखाना, बजार, सिनेमा, पार्क, धार्मिक थान, यातायात रा सगळा साधन ठप पड़ग्या। मजूरां नैं जद परदेस मांय मजूरी मिलणी बंद होयगी अर भूखा मरण री नौबत आयगी तो बै उपाळा ई टाबर-टीकरां नैं लेय'र आप-आपरै गांव कानी ब्हीर हुया। गेला मांय बांरी जो दुरगत बणी बा किणी सूं ई छानी कोनी। आं मजूरां रै टाळ छोटा दुकानदार, रिक्सा-रेहड़ी चलावण वाळा, कै प्राईवेट नौकरी करण वाळा वरगां साम्हीं घणी अबखायी आयी। च्यारूंमेर त्राहिमाम माचगी। आपरै सगै-संबंधियां री मौत सूं लोग जाबक ई टूटग्या। पण समाज री इण त्रासदी का ब्याधि नैं समाज-कंटकां आपरी स्वारथ-सिद्धि रो मौको मान लियो अर तरियां-तरियां सूं लूट-खसूट कर दीनी। ब्याधि नैं उच्छब मांय ढाळण वाळा लोग समाज रै लगैटगै हर वरग सूं ई हा। नेता, सरकार, प्रसाासन, डाक्टर, पुलिस, तथाकथित समाजसेवी लोग अर संस्थावां, व्यापारी, पत्रकार—हर तरां रा लोग भ्रष्टाचार मांय आकंठ डूबग्या। सरकार भांत-भांत सूं लोगां सूं पईसा वसूलण लागी। प्रधानमंत्री का मुख्यमंत्री सहायता कोस रै नांव सूं भेळा करीज्या रिपियां रो कोई हिसाब-किताब कोनी ले सकै। सरकार कानी सूं मिलण वाळी सहायता कै ग्रांटां री नेता, पुलिस, प्रसासन अर चिकित्सा विभाग आद मांय जम'र बंदर-बांट हुवण लागी। सेवा रै नांव माथै केई लोग दूजा सूं माल बटोर'र आपरी जेबां भरण लाग्या कै आपरी प्रसिद्धि खातर पीड़ित लोगांनैं अेक-अेक केळो देंवता थकां आपरी फोटू खींच'र सोसल मीडिया मांय आपरी नुमायस सरू कर दीनी।

जिला आबकारी अधिकारी, गुमटी रै कनै, पाली-306401 (राज.) मो. 9413190000

व्यंग्य लेखक अेक दयालु अर समाज-हितैसी मिनख हुवै। उणरै हिवड़ै मांय समाज रै लोगां सारू दया, तरस अर प्रेम री भावना हुया करै। औ ई कारण है कै बो समाज री हर कोजी, भूंडी का अन्यायपूर्ण बात माथै चोट कर उणनैं सुधारबा री आफळ करै। डॉ. कृष्णकुमार आशु आलोच्य व्यंग उपन्यास 'ब्याधि-उच्छब' मांय आपरै व्यंग्य बाणां सूं समाज कंटकां माथै जबरी चोट करी है। आशु री व्यंग्य दीठ व्यापक अर ऊंडी है। उणरी निजरां सूं कोई कोनी बच सक्यो। खासतौर सूं इण कोरोना सूं सीधै रूप सूं जुड़्या चिकित्सा विभाग रा लोग तो लेखक रै व्यंग्य बाणां री मार सूं कीं बेसी ई घावळा हुया है। 'कंपाउडरां री हड़ताल अर माफी' नांव रै अध्याय मांय तो व्यंग्यकार डाक्टरां रै भ्रष्ट आचरण रै बरणाव सागै बांरो सटीक चरित्र-चित्रण कर्‌यो है। डॉ. आशु खुद अेक लूंठा पत्रकार है पण बै आपरी बिरादरी नैं ईज कोनी बख्सै।

'ब्याधि-उच्छब' उपन्यास कोरोनाकाल रो अेक प्रामाणिक अर भरोसैजोग दस्तावेज है। लेखक री खोजपूरण पत्रकारिता अर बात नैं सटीक ढाळै पेस करण री खिमता अठै मददगार सिद्ध हुवै। उपन्यास रै कथानक रो तानो-बानो जथारथ घटणावां सूं बुण्योड़ो है। गांव जैड़ै स्हैर मांय कोरोना री आमद अर उणरै कारणां सूं लेय'र आखै स्हैर मांय फैल जावण तांई री हरेकघटणा कै बात प्रामाणिक अर हकीकी है। पण बात नैं रंजक अर रोचक बणावण सारू तथ्य मांय कल्पना री भेळप करीजी है। पण आ भेळप हकीकत नैं कठैई तोड़-मरोड़'र पेस कोनी करै। पण खरै सोनै नैं ई गैणो बणावण खातर कीं खोट का मिलावट री दरकार तो हुवै ई है।

कोई भी रचना चाहै किणी विधा मांय लिख्योड़ी हुवै, आपरै कलेवर मांय देसकाळ नैं परोट'र चालै। कोरोनाकाल मांय लेखक अेक कानी जठै समाज मांय फैल्योड़ै भ्रष्टाचार री बात करै तो दूजै कानी किसान आंदोलन, ईमानदार पत्रकारिता, धारमिक उन्माद अर फिरकापरस्ती, बधती मूंघाई, बेरोजगारी, प्रसासन री असंवेदनसीलता, आबकारी जैड़ै केई महकमां री कारगुजारियां आद विसयां माथै ई गंभीर चरचा करी है।

इण व्यंग्य उपन्यास रो नायक तो 'कोरोना' ई है जिणनैं लेखक 'गब्बर सिंह' रो रूपक देय'र पेस कर्‌यो है पण गब्बर सिंह नैं टाळ इण उपन्यास मांय ईमानदार पत्रकार गोकुलचंद रो चरित्र-चित्रण ई सांतरै ढाळै सूं करीज्यो है जको प्रसासन रै भ्रष्टाचार सूं संघर्स करता थकां काल-कवलित व्है जावै। कलेक्टर, अेसडीअेम, डाक्टर, नरसां अर बेईमान पत्रकारां रो चरित्र-चित्रण इण उपन्यास मांय जबरै रूप सूं करीज्यो है।

उपन्यास री भासा टकसाली राजस्थानी है। इण मांय कठैई आंचलिकता रो दरसाव नीं हुवै। भासा मांय अेक प्रवाह अर चुटीलोपन है, जका विसय रै निर्वाह में बाधक बणण री जग्यां सहायक सिद्ध हुवै। डॉ. आशु री व्यंग्य कला रो सै सूं लूंठो हथियार उणरो व्यंग्यमयी उपमावां रो प्रयोग है। बात-बात माथै लेखक सटीक उपमा कै

रूपक रो सारो लेवै। आखै उपन्यास मांय 'कोरोना' नैं गब्बर सिंह रै रूपक मांय पेस करीज्यो है। केई बार डॉ. आशु री उपमा देवण रो ढाळो इण तरियां रो हुवै कै बो अेक विसय का मिनख माथै व्यंग्य करता थकां अैड़ी उपमा कै द्रिस्टांत देय देवै कै उण उपमा मांय ई किणी बीजै मिनख आदि माथै ई व्यंग्य छुप्योड़ो हुवै। दाखलै सारू लेखक री आ ओळी देखण जोग है, ''पुलिस री सरम-हया इयां गायब हुयगी जियां मुख्यमंत्री कोस सूं आयोड़ी दवायां सरकारी अस्पताळां मांय सूं गायब हुय जावै।''

उपन्यास री सैली घणकरी तो बरणाव-सैली है। लेखक खुद तीजै मिनख रै रूप मांय स्हैर में घटित हर घटणा रो साखी रूप सूं बरणाव करै। पण औ बरणाव अेक फोटोग्राफी रै रूप में नीं होय'र अेक लांबै रिपोरताज रै रूप में साम्हीं आवै।

केईक जग्यां लेखक री भासा मांय बेबाकीपण जरूर है। दाखलै सारू आ ओळी देखण जोग है, ''किरसा आपरै घरां मांय घुसग्या, आपरै खेतां मांय पाणी लगावण री आदत नै किणी और तरीका सूं पाणी लगावण सारू सोचणै पड़ग्या।'' अेक दाखलो और पेस है, ''ठंडापणो अठै रै मिनख री परकत मांय ई समायेड़ो है। गरमाई बो फगत अेक जीव माथै काढै, जिणनैं लुगाई कैयो जावै, का तो मांचै माथै का सड़क माथै।''

इण तरियां ब्याधि-उच्छब अेक जबरो अर लूंठो व्यंग्य उपन्यास है। कालांतर में जद कोई सोधार्थी कै खोजी पत्रकार कोरोनाकाल रै विसय मांय कोई सोध करैला तो औ उपन्यास कोरोनोकाल रै अेक हकीकी अर प्रामाणिक दस्तावेज रै रूप में मददगार साबित हुवैलो।

उपन्यास रो कलेवर, छपाई, डिजायन आद सरावण जोग है। उपन्यास री लंबाई इत्ती ईज है कै पाठक दो बैठकां मांय पूरी कर सकै। उपन्यास री कीमत वाजिब है। कुल मिला'र औ उपन्यास रोचक, जाणकारीपूरण अर संजो'र राखण री रचना है। लेखक नैं घणो-घणो रंग अर साधुवाद।

◆◆

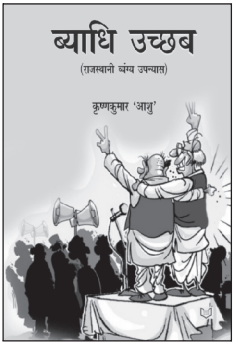

पोथी - **ब्याधि उच्छब**
उपन्यासकार - **डॉ. कृष्ण कुमार आशु**
संस्करण - **2021**
प्रकाशक - **इण्डिया नेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली**

किरण राजपुरोहित 'नितिला'

राजस्थली रै विशेषांक साथै लेखिका-सम्मेलन

29 अगस्त, 2021 नै श्रीडूंगरगढ़ में राजस्थानी तिमाही पत्रिका 'राजस्थली' रै प्रकाशन रा 45 बरस पूरा होवण रै टाणै इण पत्रिका रै 'महिला विशेषांक' रै सागै राज्य स्तरीय लेखिका-सम्मेलन ई राखीज्यो। कोरोनाकाल रै पछै औ पैलो मंचीय आयोजन तो हो ही, महताऊ पण हो। राजस्थली रो औ विशेषांक ई नीं, समूचो आयोजन मातृसगती नैं समरपित रैयो।

रविवार दिनूगै साढी दस बजी सूं सरू होय'र दो सत्रां में 'लोकार्पण' अर 'कवि-सम्मेलन' सांतरै अर सांगोपांग ढंग सूं चाल्यो। पचास सूं बेसी लेखिकावां दिल्ली, जयपुर, सिरोही, जोधपुर, झालावाड़, बीकानेर, सीकर आद सूं सम्मेलन सारू पूगी। स्थानीय साहित्य-प्रेमी अर खास पांवणा सूं उच्छब री छटा औरूं बधगी।

'राजस्थली' रो जुलाई-सितंबर 2021 रो अंक लेखिकावां नैं समरपित हो। किरण राजपुरोहित रै अतिथि संपादन में छप्यो औ विशेषांक 128 लेखिकावां री रचनावां रै सागै राजस्थानी महिला लेखन रो इतिहासू दस्तावेज बणग्यो। साहित्य री हरेक विधा सूं सज्यै इण अंक रो लोकार्पण ई कीं खास तरीकै सूं करणो तेवड़्यो हो जद लेखिका-सम्मेलन री नींव पड़ी। कोरोना ई कीं मोहलत देय दी अर 29 अगस्त रो सुभ दिन ऊगियो जद हंसती-मुळकती लेखिकावां री सवारी श्रीडूंगरगढ़ री पावन धरा पर पूगण लागी। औ अैतिहासिक लेखिका अंक अर लेखिका-सम्मेलन दोनूं अपणै आप में अनूठा हा।

इण खास मौकै रै पैलै सत्र पर मंचासीन डॉ. शारदा कृष्ण, विजयलक्ष्मी देथा, डॉ. दिव्या चौधरी, प्रो. विमला डूकवाल, किरण राजपुरोहित, डॉ. प्रकाश अमरावत, प्रधान सावित्री गोदारा, बसंती पंवार रैया। लोकार्पण री महताऊ घड़ी में संस्था अध्यक्ष श्याम महर्षि अर सचिव रवि पुरोहित भी सागै रैया। उद्घाटण करतां डॉ. दिव्या चौधरी कैयो कै भासा आपणी पिछाण है अर इणनैं जीवण रो खास अंग बणावणो चाईजै। बोलचाल में

सी-139, शास्त्री नगर, जोधपुर मो. 7568068844

राजस्थानी बोलण री आखड़ी लेवणी भोत जरूरी है। अध्यक्ष डॉ. शारदा कृष्ण कैयो कै राजस्थली रै इतिहास में औ महताऊ पड़ाव है। समै रै सागै महिला लेखन शिल्प, सौंदर्य अर विसयगत बदळाव लेवै है अर आ चोखी निसाणी है। मुख्य अतिथि प्रो. विमला डूकवाल कैयो कै मायड़ भासा नैं बचावण में महिलावां रो योगदान महताऊ है क्यूंकै बै सात पीढियां नैं संस्कारित करै। लेखिका अपणै आप सूं लेय'र परिवार अर समाज तांई आपरो फरज समझै अर समाज-विकास सारू पूरी तरै समरपित रैवै। बीज भासण में डॉ. प्रकाश अमरावत कैयो कै नारी री खिमतावां अणमाप है। इणी कारण बा घणो कीं सहन करै अर सिरजण करै। सिरजण रो औ बीज ई पछै वट-बिरछ रो रूप ले लेवै। लोक री वाहिका नारी इणी कारण साहित्य नैं समूचै लोक री जातरा करावै।

अतिथि संपादक किरण राजपुरोहित कैयो कै कोई भी छेत्रीय भासा री साहित्यिक पत्रिका रै अंक मांय 128 लेखिकावां या इण सूं बधती लेखिकावां री रचनावां भेळी नीं करीजी पण राजस्थानी तिमाही 'राजस्थली' रै मारफत राजस्थानी भासा में औ अैतिहासिक काम हुयो है। आपणी भासा री आ महिमा है कै औ रिकॉर्ड बण्यो जको राजस्थली रै परवाणै हुयो। तीन पीढी री लेखिकावां अंक रै वॉट्सऐप ग्रुप में आपरी हूंस सूं जुड़ी अर धकै सूं धकै आ माळा पिरती गई। रचना संकलन पछै भी इण ग्रुप सूं राजस्थली केई विधावां पर कार्यशाला चलाय'र राजस्थानी लेखिकावां रै सिरजण नैं नूंवो आयाम देवण री खेचळ करी। दोहा, हाइकु, सोरठा, चौपाई रा खास जाणकारां रै हेठै अै कार्यशालावां ऊंचै मुकाम तांई पूगी अर इण पेटै नूंवो सिरजण हुयो, जिणरो अेक सांतरो परिणाम राजस्थली गुरुकुल दोहा कार्यशाला में पारंगत व्ही लेखिकावां रा दोहा संग्रै छप'र साम्हीं आवणो है। इण तरै रा आयोजन सिरजकां में घणी हूंस भरै।

पैलै सत्र में मंचासीन विजयलक्ष्मी देथा भासा नैं मां कैयो अर संतानां रा फरज गिणाया। विजयलक्ष्मी जी कैयो कै भासा फगत बोलचाल रो पुळ नीं होय'र संस्कार री वाहिका है। श्रीडूंगरगढ़ प्रधान सावित्री देवी गोदारा इण भांत रै आयोजनां नैं सुखद बतायो। मोनिका गौड़ कैयो कै अठै महिलावां री भागीदारी नारी रै सोझीवान अर ऊरमामय भविस रो सानो है। इण सत्र रो संचालन मनीषा आर्य सोनी संभाळ्यो अर आपरी वाणी सूं कार्यक्रम नैं गतिमान राख्यो।

अंक रै लोकार्पण टाणै संस्था सचिव रवि पुरोहित संस्था री रूपरेखा पर चरचा करी। संस्था अध्यक्ष श्याम महर्षि कैयो कै संस्था लारला पैंताळीस सालां सूं राजस्थली तिमाही राजस्थानी भासा रै साहित्य नैं उघाड़ में लावण रै अलावा नूंवा लेखकां नैं भी साम्हीं ला रैयी है। आज रै समै में पत्रिकावां काढणो अबखो काम है, पण समिति आपरी पूरी खेचळ कर रैयी है। इणरै अलावा तेरापंथ महिला मंडल री उपाध्यक्ष मधु झाबक, बसंती पंवार, प्रगति महर्षि भी मायड़ भासा सारू आपरा विचार राख्या। समारोह में सहभागी लेखिकावां रो मंच पर चूंदड़ी, प्रतीक चिह्न, दुपट्टा अर पुसपमाळा सूं स्वागत करीज्यो।

उद्घाटण सत्र रै पछै भोजन उपरांत दूजो सत्र चालू होयो, जिणमें काव्य प्रस्तुतियां दिरीजी। सम्मेलन में आयी कवयित्रियां अेक सूं बधती अेक कविता अर मीठै सुर में गीत प्रस्तुत करया। इण सत्र में मंच पर अध्यक्षता सारू राजस्थानी विभाग जोधपुर रा डॉ. धनंजया अमरावत, खास पांवणा शकुंतला शर्मा, डॉ. जेबा रशीद, चांदकौर जोशी, डॉ. रानी तंवर, विमला महरिया, हरप्यारी देवी बिहानी हा।

आखै भारत सूं आयी लेखिकावां अर कस्बै रा पांवणा सूं पंडाळ खचाखच भरयो हो। मोनिका गौड़ रै दमदार संचालन में कवयित्रियां आपरी रचनावां रा रस केई भावां में बैवाय दिया। लगातार बाजती ताळियां औ सानो करती ही कै मायड़ भासा री मठोठ न्यारी ई है। रसां रो संवाहन जिण भांत सूं मायड़ रै सबदां सूं सांतरो पूगै, दूजी किणी भासा में पूग ई नीं सकै। इणमें नलिनी पुरोहित मेवाड़ी रंग सूं भरयै वीर रस रो गीत राख्यो। मंजू जांगिड़ समाज सूं सवाल करती रचना राखी। दीपा परिहार राजस्थानी गजल सूं छायग्या। जयश्री कंवर अर अर्चना कंवर छंदमुगत रचनावां सूं भावमय कर दिया। मधु वैष्णव आपरी चुलबुली चंचल रचनावां सूं सुणणियां रै उणियारै मुळक बिखेरता रैया। युवा पीढी री कवितावां सूं मानो सभागार ई नीं, राजस्थानी साहित्य में नूंवी ऊरमा रो संचार हुयो। ज्योत्सना राजपुरोहित, सुधा सारस्वत री काव्य में नूंवी दीठ सरावण जोग रैयी। आशा रानी जैन, प्रीतिमा पुलक, इंद्रासिंह, डॉ. कृष्णा आचार्य, तारा प्रजापत, नगेन्द्र बाला, मंजू शर्मा, संजू श्रीमाली, डॉ. संतोष बिश्नोई आपरी सरस रचनावां सूं उमस भरयै दिन नैं हरख सूं भरयो राख्यो। खनकती आवाज रै संचालन रै सागै ई रचनावां रै अनुरूप विसय पर मोनिका गौड़ आपरी रचनावां राख'र समां बांधता रैया। बार-बार उडती ताळियां रै बिचाळै अर वन्स मोर रै आग्रह पर समै री तलवार लटकै ही। मंच सूं जिम्मेदारी अर भुळावण भरया गंभीर दीठ रा वक्तव्य आया। मंचासीन पांवणियां रो चूंदड़ी आद सूं सांतरो स्वागत करीज्यो। इणरै सागै ई पधारी कवयित्रियां रो चूंदड़ी, प्रशस्ति-पत्र, चितार-चिह्न अर दुपटो ओढाय बहुमान करीज्यो।

पूरै ई दिन वक्तव्य, गंभीर चिंतन अर काव्य रस सूं दिन फूटरै अर यादगार रूप सं कद बीतग्यो ठा ई नीं पड़्यो। बिना कोई बिघन अर बाधा रै दोनूं सत्र सरस संपूरण हुया। बीच में फोटो रो सरंजाम भी होवतो रैयो, जिणसूं माहौल रैय-रैय'र फ्लैश अर अपणायत सूं भर पड़तो।

राजस्थानी लेखिकावां रो औ अनूठो मेळ केई आसावां नैं पूरी है अर केई नूंवी आसावां जगाई है। 'राजस्थली' रो लोकार्पित 'महिला विशेषांक' मील रो पत्थर तो है ही, पण भेळी व्ही लेखिकावां रै कांधै भारी जिम्मेदारी आ पड़ी है। जियां स्रिस्टी अर घर, नारी रै धीजै अर खेचळ पाण पार पड़ै बियां ई राजस्थानी भासा में सिरजण भी नारी रै पाण ई सिरै पूगसी। जै राजस्थान, जै राजस्थानी।

◆◆

मरुभूमि शोध संस्थान श्रीडूंगरगढ़ रा डॉ. चेतन स्वामी नै 10 अक्टूबर, 2021
नै चूरू में मधुकर राठौड़ सम्मान अरपित करीज्यो

संस्था कार्य समिति रा सदस्य श्री सत्यदीप नै 2 नवम्बर, 2021 नै
चुन्नीलाल सोमानी राजस्थानी कथा पुरस्कार दिरीज्यो

संस्था कार्यकारिणी रा सदस्य डॉ. मदन सैनी नै 19 दिसम्बर, 2021 नै कथा संस्थान, जोधपुर
रो सांवर दईया कथा सम्मान अरपित करीज्यो

राजस्थली रा प्रधान संपादक श्री श्याम महर्षि नेम प्रकासण रो जुगल किशोर जैथलिया राजस्थानी भाषा सेवा सम्मान अरपित करता श्री जितेन्द्र सोनी, जिला कलक्टर नागौर, पदम मेहता अर लक्ष्मण दान कविया

राजस्थली रा प्रबंध संपादक रवि पुरोहित नै नेम प्रकासण, डेह रो नेमीचंद पहाड़िया पद्य पुरस्कार अरपित करीज्यो

राजस्थानी लेखिका सम्मेलन रै मौकै संभागी लेखिकावां,
राजस्थली रा प्रधान संपादक श्री श्याम महर्षि
अर प्रबंध संपादक श्री रवि पुरोहित नै
सैनाणी अरपित कर आयोजन सारू आभार जतायो

राजस्थानी लेखिका सम्मेलन श्रीडूंगरगढ़
29 अगस्त, 2021
री
फोटुआं मिस कीं यादां

राजस्थानी लेखिका सम्मेलन श्रीडूंगरगढ़
29 अगस्त, 2021
री
ओळूं

राजस्थानी लेखिका सम्मेलन में मंचासीन मैमान

राजस्थानी लेखिका अंक री संपादक किरण राजपुरोहित 'नितिला' रो सम्मान

डॉ. शारदा कृष्ण, सीकर रो सम्मान करतां लेखिकावां

राजस्थानी लेखिका सम्मेलन रै मंगळ टांणै लेखिका विशेषांक नै लोक निजर करतां अतिथि

लेखिका सम्मेलन रै मौकै अेक जाजम माथै भेळी हुई लेखिकावां

लेखिका सम्मेलन रै मौकै संभागी अतिथिगण

महावीर माली, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (राज.)
खातर महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ में छपी

राजस्थली लेन-देन सारु :
खाता नांव : RAJASTHALI
बैंक : बैंक ऑफ इंडिया, श्रीडूँगरगढ़
खाता सं. : 746210110001995
IFSC : BKID 0007462

Website : http://rbhpsdungargarh.com